चतुर लखन लखि लीन तकि, आये निकसि सुजान।
चतुराई परखी सखन, उर सनेह अधिकान।।
छप्पै– यहि विधि करतविनोद अस्तरविसमय निहारी।
सभय सकुचि हिये चले बन्धु दोउ सर धनुधारी।।
समुझाये बहु भाँति वचन मृदु प्रेम सुधारे।
तउ पहुचावन ब्याज संग आये नृप वारे।।
निपट प्रेम पागे सखा रघुवर जानि सुजान।
करि विनती समुझाइ बहु फेरे प्रेम निधान।।
दो०-सभै सप्रेम विनीत अति, सकुच सहित द्वौभाय।
गुरु पद पंकज शीश धरि, बैठे आयसु पाय।।
मुनि सम्मीप आए दोऊ, सकुचि सु कीन्ह प्रणामा।
मुदित अशीश दई मुनि, होउदोउ सु पूरन काम।।
कवित्त– सीश सूधि पानी पोछि, पीठ ही असीस दै कै।
पूछेउ मुनि कौशिक नगर हेरी आयो लाल।।
कहाँ–कहाँ बागे कहाँ–कहाँ अनुरागे जाज्ञ।
धूमि भूमि आगे कैसे सुख मा लखी विशाल।।
रघुराज राज मिथिलाधिराज के महल देखे।
लेखे कौन लोकन से सोहत जाको लोक पाल।।
बीथिन बजारन अगारन हजारन में।
पुर नर नारिन को आये लाल कै निहाल।।
दोहा–साँझभई तुमहु अपने घर जाहू न तो सोच करै पितुभाई।
छाड़हु नेहसु नात नहि रसराम मिलोनितहि तहँआई।।

मित्रवर तुम परम आनंद आयकै, इत मोहि दीन्हा ।
प्रेम वस करि लियो हमको अति क्रीतार्थ कीन्हा ।।
सदा राखहु नेह फिरिकै आइयो मम और ।
जाहु निज–निज धाम सिगरे फिर मिलवो भोर ।।
सभय सप्रेम विनीत अति, सकुच सहित द्वौभाय ।
गुरु पद पंकज शीश धरि, बैठे आयसु पाय ।।
विश्वामित्र चरन वन्दे पुनि राम लखन दोउ भाई ।
लियेउठाय अंकमँह मुनिवर मनहुँ महानिधिपाई ।।
शीश सूँधि पानी पोछि पीठहि अशीश दै कै ।
पुछेऊ मुनि कौशिक नगर हेरि आयो लाल ।।
कहँ–कहँ वागे कहँ–कहँ अनुरागे अति जागे ।
आगे कस सुखमा लखि विशाल ।।
रघुराज मिथिलाधिराज के महल देखे ।
लेखे कौन लोकन से सिहात जाको लोक पाल ।।
वीथिन बजारन अगारन हजारन ।
पुर नर नारि को आये लाल करिकै निहाल ।।
जोरि पानि बोले रघुवीर रन धीर दोउ ।
करत प्रवेश पुर भई अति जन भीर ।।
देखे हैं हजारन अगारन वजारन में ।
विभूति वे सुमारन धरी है पंथ तीर-तीर ।।
रघुराज रंग भूमि देखे हैं स्वयंवर की ।
नाहीं–गये राज भवन जहाँ मिथिलेश वीर ।।

शिष्य रावरे के अवधेश जी के डावरे ।
बोलाये बिन बावरे से कैसे जाय मति धीर ।।
निसि प्रवेशमुनि आयसु दीन्हा । सबहीं सन्ध्या वंदन कीन्हा ।
कहत कथा इतिहास पुरानी । रुचिर रजनि जुग सिरानी ।।

लौट कर आना गुरु परनाम

विश्वामित्र चरन वन्दे पुनि राम लखण दोउ भाई ।
लीथे उठाय अंक महँ मुनिवर मनहु महानिधि पाई ।।
सिस सुँधी पानी पोछी पीठही अशीश दै कै ।
पुछेऊ मुनि कौशिक नगर हेरी अयो लाल ।।
कहँ–कहँ वागे कहँ–कहँ अनुरागे अति जाग भुमी ।
आगे कस सुख मालखि विशाल ।।
रघुराज मिथिला धीराज के महल देखें ।
लेखे कौन लोकन से सीहात को लोक पाल ।।
विथिन बजारन अगारन हजारन मे ।
पुर नर नारी को आये लाल करि कै निहाल ।।

दोनो भाई शयन के आज्ञा जाने के

सानुज श्रीराम सुनो मिथिला लखते सुभयो श्रमभारो ।
रैन गई वहुसैन करौ अब नैनन नींद ठई मनहारी ।
लेऊ अशीश सु शीश नवाय मिलैं तुम्हें मिथिलेश दुलारी ।
देखि सुदुलह वेष सुखी दृग लेहि लला हमहू वलिहारी ।।
तात गई अतिरात प्रभात भयो चहै वात सुनो राजदुलारे ।

भुलेहु देह को भान सनेह सो आवत नैनन नींद तुम्हारे ।।
सोवहगे सुकुमार नही तवहि हिय होइहि सोच हमारे ।
रस राम सुबन्धु सवै श्रम खोवहु सोवहु जाय अब प्यारे ।।

दोनो भाई को शयन के लिये जाना

सुनि रघुनन्दन के बचन मंद मंद मुसकाय ।
मुनिन वृन्द मधिगाधि सुत,कहै आनन्दपुर छाई ।।
दो०-उठे लषनु निसि विगत सुनि, अरुन सिखा धुनिकान ।
गुरु ते पहेलेहिं जगत पति, जागे राम सुजान ।।
चौ०-सकल सौच करि जाइ नहाए ।
नित्य निवाह मुनिहि सिर नाए ।।

फुलवारी प्रकरण

चौ० छंद-कियो जाइ गुरु वन्दन कर,रघुनन्दन शर धनुधारे ।
कोटिन दई अशीष गाधिसुत,शुभ हो प्राण पियारे।।
दो०-मुनि फूल लाने पठये दोऊ, वंधु महामुनि राज ।
प्रगट प्रेम प्यारी मिलन, एक पंथ दो काज ।।

फुलवारी परिकर्ण

जनक वाग में तात युगल वन्धु चलि जावो ।
अनुपम भव्य वाग देखो सोभा सुख पावो ।।
मम पूजन हित रूचिर सुमन दल तोरि ले आवो ।
होत पूजन के बेर बहुत मति देर लगावो ।।
बूझि मालिगन से भला लावो सुमन उतारि चल ।

वसु नायक रघुनाथजू मंगल होय तुम्हार भल ।।
यहि विधि करत बन्धु सनवातें गये वाटिका द्वार।
द्वारपाल चित चकित निहारे सुन्दर राजकुमार ।।
दो०-को माली यह वाग को, अधिकारी द्वितिवन्त ।
सो जो कहैं गुरू हित तो, लेहु फूल मतिवंत ।।
माली हू मिथिलेश पति की सौ करौ नित फूलनकी रखवारी।
राजकुमार कहाँ के लला पग चारी पवित्र कियो फुलवारी।।
हम कुमार अवधेश के आये मुनि के साथ ।
गुरू पूजन हित पुष्प दल तोरैं अपने हाथ ।।
फूलहु ते सुकुमार अति राउर कर कमल तोहार ।
किमि तो रोगे फूल दल मम चित करत खबार।।

कवित्त

कैसे गुरुदेव तुम्हारे सुकुमार प्यारे,
कोमल पद वाले को भेजे हैं सघन में ।
काँटे और कुस आदिक होत कुँजन मझार,
ताकर विचार कछु कियो नहिं मन में ।।
केहि विधि तोरोगे डारन ते पुष्प लाल,
कियो नहि ख्याल होत पाँखुरी सुमनमें ।
बैठो तरु छाँहीं मै कहत तोहि पाँही अवै,
लखत हौ उतारी सवै पुष्प एक छनमें ।।
दो०-फूलहु ते सुकुमार अति राउर कर कमल तोहार ।
किमि तोरोगे फूलदल मम चित करत खबार ।।

कवित्त

येहो महिपत्ति माली सुनो गुरू पूजन के हित फूल उतारन,
आये इतै हम बन्धु समेत उतारि प्रसून जो होइ न बारन।
कैसे कहे विन फूल चुने मिथिलेश की वाटिका के मनहारन,
वस्तु विरानी के पूछे विना रघुराज लेवन वेद उचारन॥
जैसे महिप महा मिथिलेशजू तैसेहि वेशवनि फुलवारी।
त्यौ तुम रक्षक दक्ष सबै कस नाहिं कहो असवैन विचारी॥
छोड़न जोग न पै इतनि रस रंगमणी गुरु सेवा हमारी।
फूल चुने श्रम लेस नहीं हमहिं निज हाथन लेव उतारी॥
छैल छवीले नुकीले दोऊ अंग अंग कोटिन काम है वारी।
तुलसीदल पुष्प उतार जितै जोई दीजै रजाई सो लावै उतारी

सुमन तोरिहैं आप क्यों हम सब तुम्हारे दास।
भरि लोने दोंने विविध ले आवें प्रभु पास॥
कहत ठीक सब चैन तुम हो माली होसियार।
काज गुरू के हेत निज लेहैं पुष्प उतार॥

कवित्त

एंहो सुकुमार सुचि सुमन सुगन्धित फूल,
मरजी हमारी विन कैसे आप तोड़ोगे।
धीरताई वीरताई एक न चलेगी लाल,
चतुराई यहाँ पर अपनी सब खोवोगे॥
ताड़ुका सुबाहुं दल मारि राम अधीन,
मिथिलापुरी है यहाँ दीन होय निहोरोगे।

सुचि सुमन सुगन्धित फूल तौ लौ जौ लौ लेन न पाइगे,
जौ लौ श्री जनकलली की जय न बोलेगे ।।
दो०-हम रघुवंशी बीर वर सुजस जगत उजियार ।
जय नहिं बोलत तियन की अस मर्याद हमार ।।

कवित्त

भाई तुम मिथिला के माली रसिक बड़े,
बाते बनाय हमें वातन उलझाओ ना ।
आतुर प्रतिक्षा गुरूदेव मेरी करत होय,
पुष्प हेतु अधिक विलम्ब अव लावो ना ।।
कोमल हित कोमल कठोर हैं कठोरन को,
'नारायण' आप नेकु हिय में सकुचावो ना ।।
बड़े भाग पाई सुखदाई मन भाई यह,
सेवा यह हमारी गुरुदेव की छुड़ावो ना ।
बोल गये इतने पर इधर उधर की बात,
मतलब की बात किन्तु बोंलत सरमायोंगे ।।

कवित्त

रघुकुल मर्यादा का इतना है ध्यान तौ पै,
निमिकुल मर्यादा से बाहर क्यों जावोगे ।
आये नारायण प्रभु प्रेम नगरियाके माही,
प्रेम के अधीन होय हा हा यहाँ खावोगे ।।
जवलो नहिं जनकदुलारीजूकी बोलो जय,
तबलो इस वाग में प्रवेश नहिं पावोगे ।

दो०-मैं माली इस वाग को सुनिये राजकुमार।
सियजू की जय बोंलि के लेवों फूल उतार ।।
जय नहिं वोलैं तियन की, यह मरजाद हमार।
फूल लेन दों वाग में, होंत विलम्व अपार ।।
सियजू की जय बोंलिके, वाग मध्य में जाय।
लगे उतारन फूल दल, शोंभा कहि नहिं जाय ।।

कवित

जासु जय जनक नरेश हैं जय के पात्र,
अपने सुकर्म से आप ही अभय हों।
योग भोग उनके अधीन सब काल रहैं,
सुजस समूह छिती तल में स्थय हों ।।
राम अधीन उनके प्रभाव प्यारी पुत्रिका की,
कीर्ती कदम्वकला निधि से उदय हों।
जाके गुणशील की प्रशंसा है विश्व माही,
प्राण प्यारी की जनकदुलारीजू की जय हों ।।

दो०-जय जय श्रीमिथिलेशजू शील गुनन आगार।
तासु सुता श्रीजानकी सदा रहे जयकार ।।
सियजू की जय बोलि के, वाग मध्य में जाय।
लगे उतारन फूलदल, शोभा कहि नहि जाय ।।
लखन लखो यह वाग बड़, सब जगमें दुतिवंत।
वास करत यामें सदा, मानहु सुभग वसंत ।।

सवैया

कहूँ लेत प्रसून प्रमोद भरे, ललिते लतिकान के झोरन में।
कहूँ कुँजन में विश्राम करैं अवनी रूह छाँह के छोरन में।।
वर बाटिका ठौरन ठौरन में 'रघुराज' लखैं चहुँ ओरन में।
चित चोरन राजकिशोरनको,मन लागिरह्यो सुमन तोरनमें।।
लखन लाल लखो यह वाग लगे तरू वेली वसंत श्रृंगार सो।
देखतहिं हरिलेत मनो सुठि सोहत है रतिमार विहार सो।।
तैसो तड़ाग मणि 'रसरंग' विकसित पंकज चार प्रकार सो।
मानो आराम भयो अभिराम विदेह को ब्रह्म स्नेह विचारसो।।
डोलत राम लिये लषनै चख वंतन के चित चोरि रहे हैं।
त्यौं, रस (राममणि) रितु राज मनोंज छबि मद मोंरि रहेहैं।।
देखन की सिय की सुखमा मन चाह उछाहन वोरि रहे हैं।
फूलि फली बगिया महाँ फैलि कै फूलि कै फूलन तोरिरहे हैं।।
जनकपाट महिषी छविखानी। नाम सुनैना परम सयानीं।।
सतानन्द तेहि वचन उचारा। कालिह स्वयंवर होवन हारा।।
ताते आजु जानकी जाई। करै गौरि पूजन चित चाई।।
सुनत पुरोहित की वर वानी। बोली महाराज महारानी।।
सखिन बोलि सबसाज सजाई। गिरिजा पूजन सियहिं पठाई।।
हेम विमल एक नवल नालकी।बनी हाल की रतन जलकी।।
कीन्ही सीता सुखित सवारी। लिये उठाइ वाह कह नारी।।
पहिरे अंवर अंग सुरंगा। भूषन भूषित सुन्दर अंगा।।
मची महा नूपुर झनकारी। सोहि रही सिय सजी सवारी।।

चली गौरिपूजन मनभाई। सिय छबि इक मुख किमि कहिजाई
गावहिं मंगल गीत सयानी । सहित ताल सातहु स्वर सानी ।।
कनक थार भरि सुमन सुहावन । हरी दूब दधि तंदुल पावन।।
धरि धरि शीसन सखी सुहाई । लिये चारु चंदन चित चाई ।।
दो०-ल्याई सखी गिरजा भवन, सिय को पूजन साज ।
प्रेम सरस प्रीतम दरस, एक पंथ दो काज ।।
तेहि अवसर सीता तहँ आई । गिरिजा पूजन जननि पठाई।।
संग सखी सब सुभग सयानी । गावहिं गीत मनोहर बानी ।।
सर समीप गिरिजा गृह सोहा । वरनि न जाय देखिमन मोहा
दो०-सखी हजारन संग में, रतन जड़ित सखी पानी ।
जय विदेह नृप नन्दिनी बोलहिं वर वानी ।।
सखी सहस्त्र सजी शृंगारा । लीन्हें चमर छत्र छवि सारा ।।
पान दान लीन्हे कोऊ नारी । पीक दान कोउ प्रान पियारी।।
अतर दान कोउ गहे दुलारी । लिये गुलाव पास कोउ झारी ।।
लिये वाल उरमाज रसाला ।कोउ विजन कोउ दरपन माला।।

कवित्त

कोउ पान दान लीन्हें कोउ पिक दान लीन्हे ।
कोई लीन्हे मुकुर अतर दान आवही ।।
कोई चारु चौंर लीन्हे कोई छत्र छाया की लीन्हे ।
कोई चन्द्रमुखी चन्द्रभानु मुखी लावहीं ।।
कोई गीत गावही रसाल 'रसराम मणि' ।
कोई स्वर्ण छरी लैन कीव सरसा वही ।।

जनकदुलारी गौरी पूजन पधारी ।
संगसोह सखि प्यारी फुलवारी छवि छावहीं ॥

कवित्त

चन्द्रकला चारूशीला चमर चलावैं ।
चारू विमला ब्यजन छत्र क्षेमा छविकारी हैं ।
हेमा हेमथार गौरी पूजा साज लीन्हें ।
शुभ शुभगा मदन कला सारी जल झारी लीन्हें ।
कमलादि कैयक हजार 'रसरंग मणि' ।
गावती अगारी औ पीछारी सौज धारी है ।
वाटिका पधारी राज विभव तैयारी जुत ।
जनक दुलारी संग सोहैं सखी प्यारी हैं ।
दो०-सिया आवतहि वाग की, छवि भई औरहि भाँति ।
कहत वनत मुखते नहीं अचरज सों दरसाति ॥

—: छन्द :—

करि सर जल विहार सखिन युत पहिर सुभग तन सारी ।
गईं अनन्दी गौरि ऐन कों श्री मिथिलेश दुलारी ॥
पूजन विविध सुभाँति करावती सखी प्रवीन सुखारी ।
भूरि प्रताप हेरि जग वन्दिनि वन्दौं पदाम्बुज प्यारी ॥
धूरि धरी तुम धर्महि को जय, जग जननी जीवन मूरी ।
मूरि सजीवन दै मति सुन्दर कीजिये मातु मनोरथ पूरी ॥
दो०-हे गिरिजे जग जननी कृपामयी शंकर प्राण पियारी ।
तुम सो कहा छिपी मनकी गति मनकी जानन हारी ॥

पासे हे गीरिराज नन्दिनी इतनी करुणा कीजै।
मम अनुरूप रूप गुण वारो, वरदायिनि वर दीजै।।
रुप रंगीली गुणगरवीली सुधर सलोनी वाला।
नवल नागरी अति उजागरी छाकी प्रेम पियाला।।
नखशिख भुषण अमल अहसन ज्यों शशी प्रसन सोहै।
नवल सुरंगा शोभित अंग निरखि राचि रति मोहै।।
पंकज नैनी है पिक वैनी गज गामिनी ललामा।
वैश किशोरी श्यामल गोरी मन हरनी सुखधामा।।
सोह रहि स्वामिनी सियाजू संग सहेली सवै अलबेली।
गौरी गीराकहिये जीन आगेग बैली लगै रति मानहु चेली
सारी सवै जरतारी कीनारीन की पहिरे तन रंग रंगेली।
पीरी हरी रसरंग मणी,कुसुमी सोत ऊदी औ नीली रमेली।
वैसे सखि चहुँ ओरे लसै सिय मध्य कृपा रस सागर बोरी।
दै सबको मुद पुँज विलोकही मंजुल कंज विलोचन कोरी।।
को वरनै छबि सुन्दर राजकिशोरी की जो तिहुलोक अंजोरी
जासु कटाक्ष विलास पिया चितकी रसरंग मणी लीये चोरी।

सखी का फुलवारी में जाना

एक सखी सिय संग बिताई

एक सखी सिय के पूजन हित सुमन लेन हित आई।
तोरत फूल वाग में देख्यो श्याम वर गौर दोउ भाई।।
भूलि गयो फूलन को लेवो तकि छविहि निहारी।
को हम कौन कहाँ वसति है या तन सुधी विसारी।।

वाटिका में युग राजकुमार विहरत फूलन तोरत बागै ।
दोना लिये अति लोना उभैकर छोना मृगेश से ज़ोवन लागै॥
देखा राजकुमार दोऊ सुन्दर अंग अंग छवि परम मनोहर ।
फूलन दौना करन सुहायो दृष्टि परतहि चित्त चोराई ॥
नीरखी विहाल भई सो वाला चतुरी भई भोरी ततकाला ।
इकटक रहि निमेषन लखै, चितवै चकित न अंग डुलावै ॥
सिरसो सरकी चुनर सारी लोक लाज गई भइ मत्तवारी ।
पैरन मग पगडगमग डोलै,आवत सिय ढीग मुख नहि बोले ॥
झुमत झुमत प्रेम मद छाकी, आई गीरत परत अति थाकी ॥

दो०-तासु दसा देखी सखिन,पुलक गात जल नैन ।
कहु कारन निज हर्षकर, पूछहि सब मृदु वैन॥
लखतेहि युगल रूप को देखी मन लजानी ।
सुन्दर सलोने के कर विन मोल बिकानी ॥
बानी को नही नयन नहि नैन को बानी ।
जो देखी आई मुझसे नहि जातव खानी ॥

हे सखी–तुम तजि संग गई सउमंग लखै अवहि फुलवारी ।
आई भई नई और दसा विवस जनुमैन नसाकी छाई ॥
आँखिन आनंद आशु भरे सिगरे अंग में पूलकावलि छाई ।
कारन सो रस रंग मणी सुख को अपने कीन देखि सुनाई ॥

दो०-तासु दसा देखी सखिन्ह, पुलक गात जल नैन ।
कहु कारन निज हरष कर,पूछहि सब मृदु वैन ॥

॥ सवैया ॥

हे सखि ! तुम तजि संग गई, स उमंग लखै अवहि फुलवाई ।
आई भई नई और दशा बिबस जनु मैन नसा की छाई ॥
आँखिन आनँद आँसु भरे, सिगरे अंग में पुलकावलि छाई ।
कारन सो 'रस रंग मणी' सुख को अपने को न देखि सुनाई ॥
मार से सुन्दर राजकुमार,उभौ गौ रसरंग मणी छवि खानी ।
वाग विलोकन आये मानो अनुराग सिंगार सवै सुख दानी ॥
वयस किशोर सखी चित चोर लखे मतिमोर औ तोर भुलानी
श्यामल गौर वखानि कहौ किमि वैन के नैनन नैन के वानी ॥

कवित्त

वानी नेह सानी सुख दानी मनमानी वहु,
प्रीति सरसानी सुनि रूप को निकाई को ।
संग लै सहेली अलवेली जो नवेली सवै,
देखन चली हैं घनश्याम रघुराई को ॥
जनक दुलारी सुकुमारी मोद भरी,
हिय रसिक विहारी सो निहारी चहुँ धाई को

कुँडलिया

बोली सिया सखिन सो हेरो राजकिशोर ।
हेरौ छवि मुख चन्द को लोचन चारु चकोर ।
लोचन चारु चकोर इकठक रुप निहारौ ।
सरस माधुरी पियो भलि विधि पलकन टारौ ।

अली आज सुख साज सवै निजनिज हिय खोली।

नीरखि लेहु भरी नैन वैन यो सियजू बोली ।।

कंकन किंकिनि

।। सवैया ।।

है वसी कार सुशव्द अनूप सुनो यह तात मनोहर ताये।
आज लों यो न सुनी 'वसुनायक' जो सुनि के मनमोर ठगाये।
युद्ध के हेतु मनोज दल साजि के लै रितुराज सहाये।
विश्व विजय हित राज मनोजहिं मानहुदुंदुभी आज वजाये।
और कियो तनको मनको यह मोपै चोप बढ़ि सासन लागी।
लै रितुराज समाज सवै संग कोकिल की रवगाजन लागी।
दूरि कै धीर समीर लगै 'ललिते' लतिका वर राजन लागी।
जीतने को जग साजन साज मनोज की दुन्दुभि वाजन लागी।
तात सु वात कहौ तुम सो जनु वीर मनोज यहाँ चलि आये।
एहि विदेह की वागहि में गौरि यहाँ वैठि के ध्यान लगाये।
पूजि प्रसन्न करो 'वसुनायक' सो गिरिजा सो अभय वर पाये।
विश्व विजय हित राज मनोजहि मानहुँ दुँदुभि आजु वजाये।

अस कहि फिरि चितए तेहि ओरा।

सिय मुख ससिभए नयन चकोरा ।।

भए विलोचन चारु अचंचल।

मनहुँ सकुचि निमि तजे द्रिगंचल ।।

देखि सीय सोभा सुख पावा।

हृदय सराहत वचन न आवा ।।

जनु विरंचि सब निज निपुनाई ।
बिरचि विश्व कहँ प्रगटि देखाई ॥
सुन्दरता कहुँ सुन्दर करई ।
छबिगृह दीप सिखा जनु बरई ॥
सब उपमा कबि रहे जुठारी ।
केहि पटतरौं विदेह कुमारी ॥

दो०-जानकी स्वरूप लखि नख सिख सुषमा गार ।
निज सौन्दर्य गुमान तजि रघुनंदन वलिहार ॥
करत प्रशंसा मनहि मन, बढ़ेउ परम उदगार ।
प्रगट रुप वरणन लगे, पावत मोद अपार ॥

॥ सवैया ॥

अनन्द इन्दु अनेकन की छवि छीनि लइ सुषमा वर जौरै ।
देवन की नर देवन की सिय को मुख देखि तियाँ तृण तौरै ॥
दीठि सो मैल न होय कहँ सकुचाय वधु सिगरी दृगमोरै ।
'प्रेम सखी' चित चोर करै पलकै झुकि आनंद मानि निहारै ॥

कवित्त

आये वर वाग में सलोनो बन्धु लाये संग,
तोरै 'रसरंगमणी' फूल तो न तोरे भे ।
ताहि समय जनक किशोरी गौरि पूजि तहाँ,
आई जेहि मोहित महीपति किशोर भे ॥
सारी घटा कारी जोर धुनि आभरन सो,
सुनि घनश्याम मानो मोरी मोरी भे ॥

सखी सिया वृन्द बीच सीता मुख चन्द्र चारु,
चितै रामचन्द्रजू के लोचन चकोर भे ॥

॥ सवैया ॥

कौन कहै सिय नेह की नीती,प्रतीती त्यौ प्रीती की पूरनताई
श्री रघुनायक आनन इन्दू में नैन लगाई चकोर लजाई ॥
श्रीरघुराज सू कोटिन वार निछावरि चातक नेह मिताई ।
मानौ लजाई पराइ गये निमि, त्यागि दृगंचल चंचलताई ॥
देखतहि सिय की सुखमा उपमा हरी हेरि कहुँ नहिं पाई ।
केती करि कविताई कविनन कौन अनूठ कहौ समताई ॥
'श्रीरघुराज' विचारि रहे मन आजु लौ ऐसी न आंखिन आई।
ज्यो छवि भौन में होन प्रकाश सूदीप सिखा विधिवारी वराई
जो कहौ विश्व की सुन्दरताई समेटि कै सिय की मुरतीराची
जो निज मोहानी रूप कहौ सम,तौंमति में रहै लाज ही माची
'श्रीरघुराज' गुणै मनमें न कविन्दन सो उपमा कछु वाची ।
है छवि की छवि शील भरी महा,माधुरीकी महामाधुरी साँची
कहत वनत नहिं सिय सुछवि पटतर परै न हेरी ।
रहै मौन अनिमिष दृगनि फिरे न फेरे फेरी ।
पुनि कछु उर ही लजाय, लता ओट निज रूप केरी ।
चितवत चकित तुराय,अनिमिष नयनन कहहेरी।
सिय मुख फंज लुभाय, चंचरीक रचि चारू चख ।
नहिं छन छननहिं अघाय,पीयत मधुर मकरंद छबि

दो०-सिय शोभा हिय बरनि प्रभु आपनी दसा बिचारि ।
बोले सुचि मन अनुज सन बचन समय अनुहारि ॥

॥ सवैया ॥

कारन जासु रची धनुजज्ञ सोई ये विदेह सुता सुखदाता ।
पूजन गौरि सखी युत आई करै फुलवाई प्रकासित गाता ॥
जाहि विलोकत मोमन छोभित भो सब हेतु सो जान विधाता
पै सुखदायक अंग सबै फरकै सुनिये 'रस राम' सुभ्राता ॥
भूलि कुपन्थन पांव धरै नहिं रघुवंसिन की अस रीति अनूठी ।
त्यौं 'रसराम' लरै वढ़िकै रन में रिपु नाहिन पावहि पीठी ॥
जाचक आयन नाहिं लहैं पर की पतिनी मन डीठी ।
है हमको जिय की प्रतीती लगै सपने पर नारिन मीठी ॥
दो०-करत वतकही अनुज सन मन सिय रूप लोभान ।
मुख सरोज मकरंद छबि करइ मधुप इव पान ॥

कुँडलिया

सुभग जानकी बदन दुति उदित चन्द सिर मौर ।
लाल लालची चित चतुर चाहत लखनि चकोर ।
चाहत लखनि चकोर सुधा छवि पीवत प्यारे ।
ललकि लगे लगवार प्यार पग पलक बिसारे ।
अंग सूमोदक मोदवत विकसित रंग रस वोर ।
लाल लालची चितवन चतुर चाहत चखनि चकोर

कवित्त-चितवै तितैहि वरसत तिन वागराज भूमि मध्य,
मनिमय अनेक स्वेत कंज छवि छाई है ।
दोउ श्याम पुतरी है हरत मलिन्द द्युति,
रस की झलकि सोई रंच अरुणाई है ।।
दौरति फिरति जहाँ रसिक हमारी मति,
केतो समुझाई रंच धीरता न आई है ।
लाजहुँ गवाई कुल कानिहु नसाई,
मर्यादा पुरुषोत्तम की सकल वहाई है ।।

।। सबैया ।।

नयन हजारन एक ही वारन राजकुमार न के केतन लागे ।
मानो अपार मलिंद मरंद सू पीवन अंबुज पै अनुरागे ।।
कौन कहैं पलकै परिवो थिरता अति भैउ तन मन जागे ।
'श्रीरघुराज' विलोकै सदा सजनिन के वृन्द बिरंचि सभागे ।।
अरविन्द के आनन ते कढ़िकै जिमिहंस के सावक द्वै सरसो ।
पुनि ज्यौं ही तुषार अपारहि तेयुग वासर नाथ प्रभावितसो।।
प्रगटे घनश्याम घटानिते ज्यो रजनी पति हियके हारसो ।
तिमि कौशललाल दोउ 'रघुराज' लतागृह ते कढ़िकै दरसो ।।

कवित्त

लाल लतिकान ओट लखि नहिं पायो,
लली एक पलक करोरी ज्यौ वितै रही ।
बोली अवकास ते सहेलिन वतायो,
देखी स्यामधन तन मति मोरी ज्यौ हितै रही ।।

देह भई भोरी सुखबोरी 'रस रंग मणी'
सरस सनेह डोरी जोरी ज्यौ थितै रही।
रामचन्द्र आनन सरद चन्द्र चारो ओरी,
जनक किशोरीजू चकोरी ज्यौचितै रही।।

॥ सवैया ॥

जानि लतान वितान के अंतर, मंजुअली करकंज उठाई।
बोली विदेह लली सो भली विधि नयन नचाय कछु मुसुकाई।
'श्रीरघुराज' विलोकि ये वीर सुवल्लीन विचिमहा छवि छाई
साँवरो राजकिशोर खरो चित चोर चितै तजो अकुलाई।।
दो०-परी लता पर दीठि जब, सीय उठी अकुलाय।
मनहु महाँ निधि नयन की दीन्ही तुरत गँवाय।।
देखा देखी होत ही लोयनि लह्यो हुलास।
सिय के उर रघुबर बस्यो, रघुबर उर सियबास।।
फूल लेत इत उत फिरे, चषन ओट पर सीय।
छिन दरशत छिन दुरत उर, लाज विरह सुखनीय
रूप लाग चित भय लगत, मगन प्रेम बारीस।
दृगवारी वर दुहुन के, खेलत लाज न बीस।।
जनक सुता मुख चन्द के, रघुवर नैन चकोर।
लाज मरुत घन इमि मिलत, अंतर करत उजोर।।
कबहुँक दामिनि ज्यों दमकि, भरत नेह छबि आय।
अवधलाल उर कंपकरि, लेती लाज लुकाय।।

सखिन मध्य ठाढ़ी सिया, मन प्रीतम छबि लीन ।
चपल नैन खंजन रुके, लाज पींजरा पीन ।।

।। कवित्त ।।

लता ओट जलद पटल मैं प्रकाशमान ।
चमकत चन्द्रमा से दोउ देव अंश हैं ।
धरति छवि है अपार वाग राजमाही चलत गयंद गति मानो
राजहंश है ।।
अति सुकुमार कहि लचकै निषंग भार,
धारे धनु निखङ्ग अरि करन विध्वंश है।
असुरन वंश को करत निरवंश एही,
परम प्रसंस हंस वंश अवतंश है ।।

कहुं मृग कहुँ द्रुम कहुँलता, अलिन बताइ बताइ ।
रूप चखत चख सीय के, खेलत दाव दुकाइ ।।
प्रीति नायिका उर भवन, वसी निरंतर आइ ।
मैन झरोखे झांकि तब, पल पट देति लगाइ ।।
लतनिओट अंतर दरस, सरस विरह थकि देह ।
नैन मूंदि छवि लाइ उर, सखि सिय लख्यौ सनेह ।।
लता सघन घन भेदि तब, प्रगटे जनु दु मयंक ।
सियहिं सुनाई कह्यो सखी, सखि सो लखु मृगअंक ।
लता सघन घन भेदि अलि, उये विमल जुगचंद ।
सियहिं सुनाई कह्यो कोउ, लहु चकोर आनन्द ।।

खुल्यौ नैन अलि वैन सुनि, दृग चकोर गति लीन।
सूखत सलिल तड़ागविच, फेरि लह्यो मनु मीन॥
निरख बाग जुग ललित अलि, खंजन चंचल चारु।
खेलत कहा अनूप गति, चतुर खिलारी मारु॥

॥ सवैया ॥

दोउन की रही प्रीति सनातन दोउ तहाँ पलकै दृग त्यागे।
ह्वै गोवियोग कछु दिन दोउन देवन कारजमें अनुरागे।
वे प्रगटे अवधेश के मन्दिर, वो मिथिलेश किय बड़ भागे।
दोउन के दृग दोउन में परी दोउन की छवि पीवन लागे॥
दो०-दोउन चख में परी, चपलासी सो चौधा।
उन्हें विसरि गौ जनकपुर, उन्हें विसरिगो औधा॥
कवित्त-दोउ जने दोउन को रूप निरखत फिरै,
पावत कहुँ ना छवि सागर को छोर है।
चिंतामणी केलि कला नीके कदम्बनी सों,
दोउ जने दोउन के चित्त के चोर हैं॥
दोउ जने दोउन पै रूप सुधा बरसत हैं,
दोउ जने छाके मोद मद दुहू ओर हैं।
सीताजी के नयन रामचन्द्र के चकोरी भये,
राम नयन सीता मुखचन्द के चकोर हैं॥
सुनिबानी सिय अलिन की, गूढ़ समास सु उक्ति।
प्रेम मरोरत लाज कौ, वनै न येकौ जुक्ति॥

प्रेम लाज दोऊ लख तुम, आलि करौ न बीच।
प्रेम प्रबल सो नीति दे, लाज़ मरैगी मीच ॥
पनबिच खेलत मीन अलि, खंजन कंचन बेलि।
चलौ अनत नत ख्यालया, लै हे लाज़ सकेलि ॥
लिपटी चहत तमाल सौ, चंपक लताजु देखु।
घन दामिनी इक संग ही, चहिये अली विसेखु ॥
लोभी लोचन दुहुन के, विडइत नव निधि रूप।
पलक परीकर संग तजि, लाज परी लखि कूप ॥
चंपक लता तमाल दोउ, जुरे जंग बरजोर।
बरसत बिन गुन चापते, तीखेबान अठोर ॥
व्यंग अलिन के बैन, सुनै न प्रेम समाधितै।
सिय रघुवर रस ऐन, अलिन संक उर मातु की ॥
दो०-क्यौं करि अलि बिलगाइये, बँधे परस्पर नेह।
इत संका उर मातु की, परी सरीत संदेह ॥
इक बोली नित आइ है, फूल लेन छवि धाम।
गौरी पूजन सीयजू, फिरि मिलाय अभिराम ॥
सोरठा-बहत प्रेम नँद जान, खैंचे अलि गहि बच्चनकर।
उततै लखन सुजान, वर वस कहि उतै इतै ॥
दो०-निपट लाज हारी अली, अवला है वल थोर।
प्रेम पुरुष सो प्रबल है, जीतौ दोहूँ ओर ॥
खुला खुली खगि खेलि छवि, पीये न नैन अघाई।
प्यासे रह्यो दुहून के, फिरि फिरि दृग ललचाई ॥

जलते काढ्यो मीन ज्यौं,फिरि झँसत करि जोर।
त्यौं इत सिय उत श्याम के,लोचन गति समरोर॥
सियजू कही सखी सुनौ, नई चमेली फूल।
गिरिजा कौं पूजन समै, लये नही मन सूल॥

दो०-लता भवन तें प्रगट भे तेहि अवसर दोउ भाई।
निकसे जनु जुग विमल विधु जलद पटल विलगाइ

कवित्त-शरीर नील पीत कल कंज वरके।
काक पक्ष नीके मन भावत सबही के॥
गुच्छ कुसुमकली के बीच बिच में सुधार के।
तिलक विराजै भाल विन्दुश्रम छाजै॥
कान भूषण सूभ्राजै सो मयंक मदहार के।
कच घूंघर वारे कंज नैन रतनारे॥
'वसुनायक' निहारे ताहि लेत वस करके।
नाशिका कपोल चारू चिबुक अमोल,
हँसि लेत मनमोला, चित्त वरबस लोभावेरी।
मुख छवि काहि न बखाने मोही जाही,
वहु कामहुँ लाजहि कोउ समता न पावेरी॥
कम्बुकलग्रीवा छवि भूषण अतीवाँ,
करि भुजवल सीवाँ देखि दृग ललचावेरी।
वाम कर दोना फूल भरै भरकोना,
'वसुनायक' सलोना श्याम अतिमन भावेरी॥

दो०-केहरि कटि पटपीत धर सुषमा सील निधान ।
देखि भानु कुल भूषनहि विसरा सखिन्ह अपान ।।

देखतहि सिय की सुषमा उपमा हरि हेरी कहुँ नहि पाई ।
केती करि कविताई कविनन कौन अनूठो कहै समताई ।।
'श्रीरघुराज' विचारि रहे मन आजु लो ऐसी अखियन तरआई
ज्यौ छवि भौनमें होन प्रकाश सुदीप शिखा विधि वारी बनाई

दो०-जनकलली अनमिष चितै श्यामल राजकुमार ।
धरेउ ध्यान मिलित दृगनि ठाढ़ि गही तरु डार ।।

तोरहिं वियोग ते ये झाँवरे भये हैं प्रिये ।
शरण तिहारे इन्है अभय दान दीजिये ।
ऋषि को वचन याद कीजिये भयो है सिद्ध
परम उदार आप भय मे न भीजिये ।।
इच्छा चारिणि न कोऊ कवहुँ असत्य भाषि
आजु निमि वंशमें सुजस क्यों न लीजिये।
नैन खोल देखि क्यों न लीजिये किशोरजू को,
अम्बिकाको ध्यान फेरि नैन मूदि कीजिये

सो०-नेक निहारौ तोहि लेचलु मातन खीजि हैं ।
मो मन संका होहि लख्यो हुतौ कछु सुपन मैं ।।

रामजी वचन लक्ष्मणजी से

लखन सुनौ मंजीर धुनि पुनि मो कानन बीच ।
अमी परै ज्यौं मृतकमुख भगै दूरि इमि मीच ।।

लखा लखी लोयन भई, बढ़ी बेलि आनन्द ।
मनौ गयौ धन फिर मिलौ, लह्यो चकोरी चन्द ।।
फूलन मिस रघुवर फिरैं, सिया चमेली चौप ।
नैन पियासे रूप रस, पियैं दुहुन के तौप ।।
बड़ी बेर भई ना मिली, लता चमेली केरि ।
सिय कहि बांध्यो सूत हम, सखि हारी सव हेरि ।।
इतने ही सियजू कही, लखी लता हम सोई ।
पै अस मंजस है बड़ो, वही राज सुत दोइ ।।
सखिन समेत निकट सिया, लखी लाल सरसाइ ।
प्रेम पंक पागी मती, कौन निसारै आइ ।।

दोउन के बाँके नैन दोउन के देखे थके,
दोउन के नहीं उपमा के सीमा के हैं ।
कंजमीन नाके भरे प्रेम के सुधा के,
मन्द करन मृगा केन गिरा केनउ माके ।
भने 'रघुराज' अनुराग के मजा के मढ़े,
काके समता के एक एक छवि झाँके हैं ।
मेरे मनसा के गुन कहि ना मृषा के बयन,
शील करूणा के कछु अधिक सियाके हैं।

दोउ दुहुँ मुखचन्द को देखि के आनंदित नयन चकोर करैं रहै।
सिन्धु सुगन्ध दोऊ दुहुँ के सुमानस मत्त मलिन्द अरे रहैं।
नयन सो नयन सुबयन त्यों अंश सो अंस सुप्रसंसि धरे रहै ।
प्रीति प्रतीत पगे प्रिया पी करि 'वसुप्रेम' पयोधि परे रहै ।

कौन कहै सिय नेह की नीती प्रतीती त्यौ प्रीती की पूरनताई।
श्री रघुनायक आनन इन्दु में नैन लगाई चकोर लजाई।
'श्रीरघुराज' सुकोटिन वार निछावरि चातक मेह मिताई।
मानौ लजाई पराई गये निमि, त्यागी दृगंचल चंचलताई।

॥ चलि राखी उरश्यामल मूरती ॥

फेरि दुहुन के मीन दृग, परे महाछबि वारि।
चलौ अली गिरिजा भवन,मदन बड़ौ खिलवारि॥
चमन चमेली चन्द्रमा, वेदी वकुल चकोर।
लगी टकटकी अघट की, होन चहत नहि भोर॥
अघट बात या हम लखी, वंदत इन्दु चकोर।
भई दुअंगी प्रीति अब, होय कौन विधि भोर॥
तमको तजै न जामिनी, भामिनि तजै न कंत।
मित्र मित्र को ना तजै, कहत रसिक बुधिवंत॥
गूढ़ अलिन के वैन, सुनि विहँसे रघुलाल त्यौं।
इत सकुचे सिय नैन, उर सनेह सरसी लता॥
दो०-विमल विधू मोहिस नभसि,उडगन सहित प्रकाश।
नेह सरद रितु है सखा, प्रेम प्रनय जुग मास॥
देखि राम शोभा सुख पावा हृदय सराहत बचन न आवा।

॥ नायक उक्ति ॥

वारी चय वारी मुख कोटि ससिवारी,
गुनवारी सुकुमारी जोतिवारी उजियारी है।

जोती सुरनारी जेती सुखमा सुधारी,
विधिहारी बखानत छवि सारदा विचारी है ॥
उपमा कि वारी सी किवारी मेरे नैन हूँकी,
और छवि उर मैन पैठत प्रचारी है ।
मूरति या धारी निहारी जब नैननि सों,
जनक दुलारी की समान कौन प्यारी है॥
वारी वयवारी सुकुमारता निहारी जासु,
कमल गुलाबहुँ निछावरी बिचारी है ।
जासु मुखचंद उजियारी लखिचंद कहा,
मंद होत दामद्युति देह की निहारी है ॥
सुर नर नाग नारी ऐसी कौन रूपवारी,
जदपि बिरंचि रचि पचि कै सुधारी है ।
जनकदुलारी की समानता न मिलै कहूँ,
बानी बुध शेष मति हेरि हेरि हारी है ॥
सुषमा की माला किधौं साला गुन बृन्द हीकी,
मैन सर ज्वाला उरऐन में समातसी ।
दामिनी की स्वामिनी सरद ही की जामिनी की,
साँझ है दिवाली कि कला की कलात सी ॥
रंग की रजनी कीधौं सजनी मुद मंगल की,
ओप की उपज कीधौं काम कला घात सी ।
जनक दुलारी फुलवारी उजियारी करैं,
मेरो मन हरैं ढरैं रंग रसवात सी ॥

सील सनेह भरे नैन, रस भरे वैन वर,
चैन उर करे मंद, हास चंद करसी ।
चलनि विलास गज, हंसनिकौ हरै मान,
तान गति धरे पाय सहज सरपरसी ।।
मालती चमेली कुंद, मोगरा गुलाब हूते,
अधिक सुगंध प्यारी अंग ही में परसी ।
मोतिन में मनीहूँ में, दीपकनि अनीहूँ में,
सियाजू के अंग ही की ओपछटा सरसी ।।
विष में बंधुकहू में, नवल प्रवाल हूँ में,
मूँगन की मालन में दाडिम के फूल में ।
मेंहदी मेजीहू में कुसुम औ जावक में,
और जग जेती वस्तु ताके समतूल में ।।
जेती है ललाई तेती, सियाजू के ओठनि की,
छीट छाट परी है विरंची कूल कूल में ।
लखनि में चखन में सोइ उजियारी करै,
कोटि कोटि चंद चाह झूलै मुख हूल में ।।
कुल वय रूप गुन सकल समान ताई,
छाई है परसपर प्रीति अधिकाई की ।।
वरन बिशेषताई आई भली अंगहू में,
नव घन दामिनी सी सदा संगताई की ।।
नगर विलोकिवै को आए दोउ भाई तब,
देखि ऐसी इच्छा भई सिया समताई की ।।

एपै शिवचाप कीन बीस्र विधन विचारियत,
पिता सो न कहत बनै बात लाजताई की ॥

॥ दोनों भाई के पररूप वार्त्ता ॥

प्यारी को सुनाय बात कहै लाल लखन सो,
चखन मग आई प्यारी हिय में समाई है।
मिथिला को आवतही मग मै सुपन भयो,
कह्यो सो न लाज बश अवसि भलाई है॥
शंकर हूँ पूजे निज संकर के हेतु नित,
सो तौ मम संकर की मूरति दिखाई है।
प्यारीजू के हेत तो पाताल लै कै स्वर्ग धरौं,
स्वर्ग फार डारौ केती चाप गरुआई है॥
भये जे दिनेश बांश ईस अंस संसनीय,
येक आत पत्र सत्रु जई जस छयो है।
कहै को नदान जाकौ उपमा न लहै कवि,
जाचक कौ आपने शरीर हू लौ दयो है॥
पंच वीरताई चलि आई कुल आज ही लौ,
काहू पै न अजस दोष लेस हूँ न लह्यो है।
भूपन के भय है स्वयंबर गये है तहाँ,
विन जयमाल गले कौन घर गयो है॥

॥ रामजू वचन सखी प्रीति वार्ता वर्णन ॥

कौसलेश कुँवर की वानी सुखदानी सुनि,
अलि सरसानी उर सिया मोद भारी है।

मन दृढ़ताई सब दूरि लै बहाई,
सब लाज अधिकाई मन तन दसा न्यारी है।।
अली रस रली वात कही कछु प्यारीजू सौं,
रहीं त्यो लजाइ याती नात रसकारी है।
येक सखी सुमन की माल सिय वाल कर,
हाल ही वनाइ दई कही उरधारी है ।।
राघव सुजान कौ सुनाइ अली रंग रली,
वात कही सखी सौं प्रवोध परचारी है ।।
भौंर ही के हेतु ज्यौं कमलनी रची है विधि,
चंद हीके हेतु जैसे जामिनी सुधारी है ।।
काम ही के हेतु जैसे रती वर नारी रची,
इन्द्र ही के हेतु जैसे सची सुखकारी है।
तैसे ही सांवरे सुजान नृप कुँवर काज,
सियाजू को रची रुचि रूप गुन भारी है।।

।। सखीन प्रीति बचन देखो ।।

सुनो मन कान दे कै राघव सुजान बात,
वन्धु सन बोले देखो समता समाज की ।
सुरगुर संकर अहीश सविधि सारदहूँ,
हेरैं हठि उपमा जो तिरहुति राज की ।।
हेरि हेरि हारि बैठे फेरि-फेरि लोकन में,
उपमा न मिलै कहूँ नृप सिरताज की।

गुन गहवाई चतुराई अति देखियत,
छोटी छोटी कन्याहूँ में जनमी जे आज की ॥

॥ बहुरी गौरी ॥

देर भई शाखन को गहि ठाढ़ी होइहै पग पीरन जोवै ।
ध्यान धरै गिरिजा वपु की मिथिलेश लली क्यों समयो खोवै ।
पूजन कीजै बहोरी उतै चलि माँगिये जो मन में होवै ।
देखिये साँवरो राजकुमार खरो 'रघुराज' महाँ मुद मोवै ॥
दो०-सखि बचन सुनि सकुचि सिय पुनि दृग पल उधारी ।
सनमुख गढ़े कुँवर लखि, गई मनहि बलिहारी ॥
नखते सिख लो लखि राजकिशोर सिया चखमें न परै पलकै ।
मिलि है मोहि नाथ विशेष दुते हठि होत विसवास हिय झलकै
'रघुराज' न लाज तजे वनतो नहि जात वनै शरणौ कलकै ।
छबिको छलकै अलकै सलकै लखि कै हिय में हलकै ललकै ॥
पितुकै पन को सुधि कै पुनि सो पछितातो मनहिं नहि धीरधरै
हर को धनु है अतिहि कठिनै महि पालन को नहि टारो टरै ।
'रघुराज' महाँ सुकुमार कुमार कहौ किमि तोरिहै मंजु करै ।
विधि ऐसी करौ इनहि के गरे मम हाथन सो जय माल परै ।
चाप महेश को होय हरू अवधेश को लाड़िलो पाणि सो तोरै
वादिन देव दिखाउ हमै जायमाल धरौ इनके गल ठौरै ।
'श्रीरघुराज' सदा निरखौ हरषौ यहि औसर जो चित चोरै ।
साँवरे होय हमारो पिया अरु देवर होय लला लघु गौरै ॥

देखैं वहोरि वहोरी कुरँगन त्योंहि विहंगन मृगन सीता ।
तामिस राजकुमार विलोकति होत अघाऊ नचित्त पुनीत ।।
लालच लागि विलोकन की इति त्यों उतहै जननि ते सभीता
खेलत चित्त से चंग चली ज्यों वाँधि 'रघुराज'के प्रेम पुनीता ।

।। फीरहि बहोरी ।।

देखैं बहोरी कहोरी कुरगन त्यौहि विहंगन मृगन सीता ।
तामिस राजकुमार विलोकति होत अघाऊ न चित्त पुनीता ।
लालच लागि विलोकन की इत त्यौ उतहैं जननी ते सभीता ।
खेलत चित्त से चंग चली ज्यौ वाधि 'रघुराज' के प्रेम पुनीता
दो०-देखन मिस मृग विहग तरू फिरइ बहोरि बहोरि ।
निरखि निरखि रघुवीर छवि बाढ़इ प्रीति न थोरि।
जानि कठिन शिवचाप विसूरति चली राखि उर स्यामल मूरति
पूजन हेतु पुरारी प्रिया के अम्बा से आयसु लैवैं ।
वेगि चलिये अब देर करिये जनि माता बूझब का कहिवैं ।
भोर आये पुनि भवानी 'मधुर अली' हम वलि जैवैं ।
दूर सिधारत जानि के जानकी पाटी तहाँ अपनौ मन कीनी ।
प्रेम तरंगन रंग अनेकन त्यो मति की लेखनी कर दीनी ।
नेह की स्याही जलै अनुरागको 'श्रीरघुराज' प्रिया निज चीनी
'श्रीरघुवीर' कियो तसवीर वनाय सिया हिय में धरि लीनी ।
दुरत दरस तिमि जानिकैं रचि रचि रुचिर रघुवीर ।
चित मिथिलेश कुमारि की रचि रुचिर तसवीर ।
प्रभु जब जात जानकी जानी । सुख सनेह सोभा गुन खानी ।

परम प्रेममय मृदु मसि कीन्ही ।चारू चित्त भीतीं लिखि लीन्ही
गई भवानी भवन वहोरी । बंदि चरन बोली कर जोरी ॥
जय जय गिरिवर राजकिशोरी । जय महेश मुख चन्द चकोरी
जय गजवदन षडानन माता । जगत जननि दामिनि दुतिगाता
नहिं तव आदि मध्य अवसाना ।अमित प्रभाउ बेद नहिं जाना
भवभव विमवपराभवकारिनि।विश्वविमोहनि स्नवसविहारिनि
दो०-पति देवता सुतीय महुँ मातु प्रथम तव रेख ।
महिमा अमित न सकहिं कहि सहस सारदा सेष ।
सेवत तोहि सुलभ फलचारी । वर दायनी पुरारि पिआरी ॥
देवि पूज पद कमल तुम्हारे । सुर नर मुनि सब होहिं मुखारे।
मोर मनोरथ जानहुँ नीके । बसहुँ सदा उर पुरसवही के ॥
कीन्हेउँ प्रगट न कारन तेहीं । अस कहि चरन गहे वैदेही ॥
विनय प्रेम बस भई भवानी । खसी माल मूरति मुसुकानी ॥
सादर सियँ प्रसादु सिर धरेऊ। बोली गौरि हरषु हियँ भरेऊ।
सुनु सिय सत्य असीस हमारी । पूजिहि मन कामना तुम्हारी।
नारद वचन सदा सुचिसाँचा। सो वर मिलिहि जाहिं मनराँचा
छं०-मन जाहिं राचेउ मिलिहि सो वरु सहज सुंदर साँवो।
करूना निधान सुजान सील सनेह जानत रावरो ॥
एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषीं अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मन्दिर चली ॥
जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि।
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे ॥

श्याम सलोनो शील निधि सो तुम्हरो पति होई ।
करूणा कृपा निधान जो सब विधि परम सुजाना ।
सोई हौ तुम प्राणधन यह हमरो वर दान ।
जावहुँ सुख सो भवन अवभ्रम सन्देह मिटाय ।
दो०-जामे तुम्हरो मन रमेउ, सोइ निज प्रीतम पाय ।
रहियो सदा प्रसन्न मनु, आनन्द सिन्धु समाय ।।

।। श्री गिरिजा के प्रन वरदान देना ।।

पूजि भवानी प्रेम जुत, करि विनती करजोर ।
मनही मन माँगत सिया, वर साँवरो किशोर ।।
उहै चमेली दाम, गिरिजा उर पहिराइ सिय ।
सोई करत प्रनाम, गिरिजा सिय को दइ हरखि ।।
पुनि प्रगटी निज रूप, सिय को वर भावत दियौ ।
फेरि भई वहि रूप, सिय पूजी मन कामना ।।
दो०-भली फली यह वाटिका, गिरिजा चतुर सुजान ।
सब वर पायो सीयजू, सुषमा शील निधान ।।
बरबस गइ सिय गेह, सखी संग निज बस नहीं ।
प्रीतम सों अति नेह, देह गई मन इत रह्यौ ।।
पुनि गवने रघुचन्द, लखन संग तन प्रेम बस ।
भई चरण गति मंद, मन दृग प्यारी संग लगे ।।
दो०-गिरजा पूजन जनकजा, फूल लेन मिस लाल ।
भयो मिलन यह दूसरे, मृदु हँसि बोली बाल ।।

निरखु चकोरी चन्द्रमा, उग्यो तिहारे भाग।
भँवर कमलनी रस भरी, बसि वाटिका तड़ाग ॥
फूल लेत करकंज दोउ, नयन पियत रस रूप।
अपर अंग वर दुहुन के, परे विरह रस कूप ॥
अहो डसी वह नागिन, बैठी कदली पात।
चन्द चाप लीन्हें करत, मेरे तन सरघात ॥
हंस निरखि भय होत जिय, सिंघ निरखि तन कंप।
मोहि सतावत है अहो, मूरति वंती संप ॥
बढ़्यौ नेह नद पूर, वह्यो जात हौं हे सखे।
नौका है अति दूर, कहौ प्राण कैसे रहैं ॥
अरे चलत समसेर, चहूँ वोर तैं चमकती।
सखा नमो तन हेरि, टूक टूक तन के भये ॥
परयौं गंभीरे कूप, को काढे इत आन कै।
गिरि लखि गिरयौ अनूप, चूर चूर तन मन भयौ ॥
हृदय सराहत सिय लोनाई। गुरू समीप गवनेउ दोउ भाई ॥

दो०-सादर चरणन शीश धरि, रघुवर कियो प्रनाम।
पुनि प्रसून दोना दियो, मनमोहन सुखधाम ॥
हिय में सिय मूरति वसी, निरखि निरखि हुलसात।
प्रेम चिन्ह तन में प्रगट, लखि पूछत मुनि वात ॥
नाथ विदेह को वाग वनो, तरु बेलि रती लै मनोज मनलोभा।
ताहि लखै मिथिलेश लली, वरनी जग जासु अलौकिक शोभा

औचक दृष्टि परी हमरी, न फिरी छवि सोछकि मो मनछोभा
संग 'रसरंगमणी' सुलखै लखनौ, इनके चित नेकु न लोभा ।।
धन्यलला विमल तुम वानि,विहीन छलसेरहितसुनिकोनबिकाई
या मन की गति को फल हालहि,कालहि लेहु विजै अधिकाई
भानहि भानुमणी लखि चन्द्रहि चन्द्रमणी ज्यौं द्रवै न रूकाई ।
त्यौं रसराममनी मन छोभित, लोभितभो निज नेह निकाई ।।
रामसदा सुभ होय सुनो, अव सत्य अशीष हमारी ।
मंगल मोद बढ़े नित ही पुनि सिद्ध मनोरथ होय तुम्हारी ।।
दोउ चिरजीवी रहो 'वसुनायक' लायक है सबके हितकारी ।
पूरी है आस हमेस लला, मिलिहै तुमको मिथिलेश कुमारी ।।
दो०-तुमरे मन में जो वसी मूरति सुखमागार ।
शिव प्रसाद सोभा इहाँ आशिरवाद हमार ।।
छके लाड़ाली लाल धरी, भावत छवि दृग ही ।
चलि महल सिय वाल, गुरु समीप गवने कुर ।
राम रसिक रस पान, रहि लाड़िलि ध्यान पगी ।
सिया मोहनि हृदयधरी, राम घुमत चले लखी ।
बिगत दिवसु गुरु आयसु पाई, संध्या करन चले दोउ भाई ।
प्राची दिसिससि उयउ सुहावा,सिय मुखसरिस देखि सुखुपावा
बहुरि विचारु कीन्ह मन माहीं, सीय बदन सम हिमकर नाहीं
दो०-जनम सिंधु पुनि बंधु विष, दिन मलीन सकलंक ।
सिय मुख समता पाव किमि, चंद वापुरो रंक ।।

घटइ बढ़इ विरहिनि दुखदाई । ग्रसइ राहु निज संधिहि पाई।
कोक शोक प्रद पंकज द्रोही । अवगुन बहुत चन्द्रमा तोही ॥
वैदेही मुख पटतर दीन्हे । होइ दोष बहु अनुचित कीन्हे ॥
सियमुखछबि विधुव्याज वखानी।गुरु पहिचले निसाबड़गनानी

॥ सवैया ॥

रे विधु कोकन शोक प्रदायक, तू जग जाहिर पंकज द्रोही।
काम को मीतकरै अति शीत,कियो गुरु को अपकार है कोही।
भाषत श्रीरघुराज सुनै सिय, के मुख की सरि तोहि न सोई।
नीक न लागत मोहि मयंक, बड़ो विरही जनकी निरमोही।
करि मुनि चरन सरोज प्रनामा,आयसु पाइ किन्ही विश्रामा।
विगत निसा रघुनायक जागे, वंधु बिलोकि कहन अस लागे।
उवउ अरुन अवलोकउ ताता, पंकज कोक लोक सुखदाता।
बोले लखन जोरि जुग पानी, प्रगट प्रभा सुचक मृदु बानी।
दो०-अरुनो दय सकुचे कुसुद उड़गन जोति मलीन।
जिमि तुम्हार आगवन सुनि,भए नृपति बलहीन॥
तेहि अवसर तहँ पहुँच विदेहू।मुनिहि प्रणाम कियो अतिनेहू।
यथा योग रामहि मिलि राजा। हरषि प्रणामी मुनिन समाजा।
मुनि संकेत बैठि शुभ आसन। समाचार सब कहेउ सुभाषण।
पानि जोरि बोले नृपराई। नाथ दरश सब शोक मिटाई॥
दीप दीप के नृपति महाना। आये सब मम प्रण सुनि काना
धनुष यज्ञ पूर्णाहुति काला। जानहिं सब प्रभु हृदय विशाला
अति महि बसहिं नाथ बलतोरे। होय सुफल बिनवहु करजोरे

असकहि भूप अधिक अनुरागे । बारम्बार मुनिहिं पद लागे ।
पानि फेरि सिर मुनि हर्षाई । भूपहिं बोलेउ बचन सुहाई ।
सुकृत स्वरूप भूप बड़ भागी । परम भागवत ज्ञान विरागी ।
तब संकल्प व्यर्थ नहिं जाई । करिहैं शंकर सविधि भलाई ।।
होनी होवै कालि महीपा । देखिहौं विधिकर रचा महीपा ।।
दो०-शयन करहु गृह जाय अब, सब विधि चिन्ता त्यागि ।
ईस चहै सोई करैं, अन्य उपाय न लागि ।।
नृपघर आइभोजनतब करिकै।सयन कियो हरिहरउर धरिकै।
इतै उठे मिथलेश प्रभाता । कियो बिचार बुद्धि अवदाता ।
आजु सुखद शुभ योग सुहावन । शतानंद कहँ चहिय बुलावन
शतानंद कहँ पठयो धावन । लायो तुरत पुरोहित पावन ।
करिप्रणाम विधि पूजि नृपाला।कहेउ विनययुत वचनविशाला
नाथआज अंतिम दिन आवा । लवलगि सुता मन कामनपावा
नृपति सहस्त्रन आइ पधारे । बैठे मनहिं आस अति धारे ।
देखन हेतु यज्ञ फल भारी । आये रंगभूमि नर नारी ।।
दो०-देश बिदेसहिं ते प्रजा, आई आज विशेष ।
समय भयो अतिशय निकट,पूरण यज्ञ द्विजेश ।।
कौसिक मुनि युत राजकुमारा ।अब लगिनाथ नाहि पगुधारा
कृपा कोर मोहिं राउर देखी । जाय लिवावैं उन्हे विशेषी ।
शतानन्द मन महँ मुसुकाई । बोले लावैं अबहिं लिवाई ।
अस कहि चले चतुर मुनिराया । पहुँचे कौशिक पहँ अतुराया
मिले परस्पर युगल मुनीशा । एक एक कहँ नावहिं शीशा ।।

हिलि मिलि दोउपुनि आसन राजे। मनहुँ दिवाकरयुगतहँ भ्राजे
कीन्ह दण्डवत रघुवर श्यामा ।सहित लषनभलभाव ललामा
आशिष दीन्ह मुनिहिं हरषाई । पेषि प्रभुहिं पुलकावलि छाई

दो०-जनक बुलाये सचिव सब, दियो निर्देश सुनाय।
यथा योग्य सब नृपन कहँ, बैठा बहु तुम्ह जाय ॥

मंत्री सचिव सुसाहिव धाये । लागे सब बैठावन भाये।
रही मंच अवली जो आये । बैठाये राजन बड़ भाये ॥
तिन्ह मन बड़पन के अनुसारा । भे आसीन भूमि भरतारा।
तिन्ह पाछे मंचावलि माहीं । बैठाये सब सज्जन काहीं।
तृतीय मंच अवली जो भाई । पुर जनपद दीये बैठाई।
अति उमंग मंदिर चहुँ ओरे । बैठि नारि नर बालक रौरे।
रंगभूमि महँ अति उत्कर्षा । भयो महा मानव संघर्षा।

श्री मिथिलेश जी को रंगभूमि में बुलाना

नाथ सभा महँ धारिअ पाऊँ । आये सकल भूपचित चाऊ।
रंगभूमि महँ जुरी समाजा । तव आगमन चहत सबकाजा।
सुनि विदेह भूषन वर धारे । रंगभूमि कहँ समय सिधारे।
सासन भेजि दियो रनिवासा । बैठ झरोखन लगे सुपासा।
मंत्रिन्हयुत मिथिलेशमहाराजा ।आयोरंगमहिसहित समाजा।
कस मस परत कढ़त जनकाहीं । अंग अंग दीसै जानु जाहीं।
सिय प्रताप महिमा प्रगटानी । नहिं संकेत पर्‍यो कछु जानी।
पूरव पश्चिम दक्षिण ओरा । बैठे भूपति मनुज अथोरा।

राज प्रकृति उत्तर दिशि पाहीं । जनकासन ढ़िग बैठत जाहीं ।
फटिक मणी आसन तेहि पाछे । तहँ रनिवास विराजत काछे ।
दो०-कहि सब साज समाज युत, रंग भूमि चलु सीय ।
जाय झरोखा वैठहू, जहँ तुम हार्षित हीय ।।
करि सिंगार विचित्र आते, मोहिन रूप बनाइ ।
नख सिख नवल सिंगार महँ, नवतन अति छवि छाइ ।

।। चौबोला छंद ।।

सब आई पुनि मातु निकट, आह्लाद् सहीता ।
जन तिन्ह मोद न थोर, देखि मुख पंकज सीता ।।

।। सवैया ।।

मंत्रि सुजान सुदामन जाहु, निवास जहाँ रनिवास लली को ।
साजि विभूषण अंग सवै, करिकै चहुँ ओर समाज अलीको ।।
त्यों रस रंगमणी मुक्ता, वरसावत गावत गीत भली को ।
शंभु शिवापद शीश नवाय, ल्यावहु सीतहि रंग थली को ।।

।। श्री किशोरी जी का आगमन ।।

महाबिमल एक नवल लालकी । वनी हाल की रतन जालकी ।
कीन्हीं सीता सुखित सवारी । लिये उठाइ वाहिनी नारी ।
पहिरे अम्बर अंग सुरंगा । भूषण भूसित सुन्दर अंगा ।
दो०-कोइ सखि छत्र लिये कर, कोइ कर चँबर चलाइ ।
कोइ गावति कोइ हाँसयुत, चलती भाव दिखाइ ।।
छरी हजारन संग में रतन, जडित सखि पानि ।
जय विदेह नृप नन्दिनी, बोलि राही वर बानि ।

॥ चौबोला छंद ॥

चली सीय के संग मधुर स्वर मंगल गावति ।
मन उमंग करि विविध भाँति ते साज बजावति ॥
सब सीज समाज रंगभूमि के महल झरोखे पै गई ।
दिव्य विछावन पर सबै मन प्रमुदित बैठति भई ॥

॥ श्री रानियों का आगमन ॥

पुनि आई रनिवास सकल गोतियन संग सोहैं ।
गावति मंगल गीत श्रवण करि कोकिल मोहैं ॥

॥ श्री बिश्वामित्र श्री सतानन्द सम्बाद ॥

बोले गधि सुवन मति सेतू । कहहू आगमन करि मुनि हेतू ।
सतानंद तब बचन सुनायो । तुमहिं विदेह नरेश बुलायो ॥
कौशल नाथ कुमार समेता । रंगभूमि कहँ चलहु सचेता ।
मुनि समाज संयुत मुनिराई । चले स्वयंवर लखन तुराई ॥
ईश कृपा को पाय सुजाना । होइहि सबविधि भाग्य प्रधाना ।
सुनत सभा सह लखन कुमारा । बोले बचन प्रभाव बिचारा ।
रावरि कृपा जाहि पर होई । कीर्ति विजय पाइय प्रभुसोई ।
दो०-कौसिक आवत कुँवर युत, कीन्ह चहिय सत्कार ।
सबके ऊपर अवनि महँ, अवध भूमि भरतार ॥
रामलखन सों कह मुसकाई । बैठहु इतै अबै दोउ भाई ॥
जबलगि नहि मिथिलेश कुमारा ।तुमहिं बुलावन कहुँ पगुधारा
उचितन तबिलगि जाब तुम्हारा । तुमसमान नहि राजकुमारा

प्रथम जात हम जहाँ विदेहूँ । जब बुलवैहै तब चलि देहूँ ।
असकहिमुनि समाज तहँराखी। चल्यो विदेह दरस अभिलाषी
पहुँच्यो रंगभूमि के द्वारा । प्रतीहार तब जाय पुकारा ।।
महाराज कौसिक मुनि आये । राजकुमारन संग नहि लाये ।।
सुनि विदेह विस्मय उर आनी ।चल्यो लेन मुनि को अगुवानी
कियो जाय नृप दंड प्रणामा । दिये मुनी तेहि आशिष धामा ।
रंग भूमि लै गयऊ लिवाई । हर्षे लखि समाज मुनिराई ।।
सब मंचन ते मंच उतंगा । राज मंच जेहि शोभ अभंगा ।।
दो०-कौशिक को बैठाय तेहि, कियो विविध सत्कार ।
पूछयो कारन कौन नही, आये राजकुमार ।।
मुनि मुस्काइ कही तब बानी । अहो विदेह बड़े विज्ञानी ।।
सतानन्द मुनि गये बुलावन । आये हम तब सदन सुहावन ।
वे तो अवधअधीश लाड़िले ।आवहिं किमि बिन गये कुमारे ।
नहि समान भूपति के दुलेता । राज राजदशरथ दुलहैता ।।
लक्ष्मी निधि तिनजायँ बोलावन।आवहिं राजकुँवर मनभावन
सुनि विदेह बोले हरषाई । भलो सिखावन प्रिय ऋषिराई ।
तुम नहि कहहुँ कौन असकहई । तुम सम नही ज्ञाता जगअहई।
पुनि बोल्यो लक्ष्मी निधि काहीं । आयो कुँवर तुरत तहाँहीं ।।
कह्यो विदेह जाहु तुम ताता । आनहु अवध कुँवर अवदाता
लक्ष्मीनिधि पुनि शासन पाई । चढ़यो तुरंग चल्यो अतुराई ।।
कौशिक एक शिष्य पठवायो । राजकुमारन कहि बुलावायो ।
जहाँ अवधेश कुमार उदारा । आयो लक्ष्मीनिधि सुकुमारा ।।

दो०-उतरि तुरग अति दूरते, पगनि चल्यो महि माँहि ।
चलि आगे लेते भये, राम लखन तेहि काँहि ॥
मिल्यो परस्पर राजकुमारा । मानहु चंद रबि अगिन उदारा
पूछि परस्पर कही कुशलाई ।लक्ष्मीनिधि बोल्यो सिरनाई॥
रंगभूमि आयो सब राजा । भगिनी स्वयंबर होत दराजा ॥
आप पधारहुँ पिता बोलयो । हय गय रथवाहन पठवायो ॥
प्रभु कहँ जबते गुरू संग लागे । हय गय रथ बाहन सब त्यागे
चलिहौं पगन पुहुमीपर प्यारे । रंगभूमि जहँ पिता तुम्हारे ।
कौशिक शिष्य कह्यो पुनि जाई । राजकुमार बोल्यो मुनिराई
गुरु शासनसुनि दोउ रघुराजा ।चले सहित सब मुनिनसमाजा
परम दिव्य रथ रसिक विराजे । अमित सूर्यतेहिलखतहिंलाजे
रथ चढ़ि चले सकल हर्षाया । जय जय शब्द तहाँ शुभछाया ।
बरषि सुमन दुन्दुभी बजाई । हरषी सकल सुरन्ह समुदाई ॥
जात राम लक्ष्मीनिधि संगा । पंच शब्द धुनि होत अभंगा ॥

दो०-राम लखन दोउ बन्धु वर, रंग भूमि कहँ जात ।
सुनि सुनि पुरवासी सकल, चले लषन अतुरात ।
चमचम चमकत मेरु समाना । देखत लाजहिं देव विमाना ।
बैठक उच्च सिंहासन सोहै । छत्र चमर हलरत मन मोहै॥

दो०-सुभग सुचंचल अष्ट हय, नख निख भूषण धारि ।
श्याम करन यानहिं नहे, सिन्धु अश्व लखिहार ॥
आवत देखि कुँवर नृप केरै । प्रतीहार दूरहिं ते टेरै ॥

महाराज भूपति सिरताजा । आवत अवध कुमार रघुराजा ।
सुनि विदेह आनँद न अमाई । रामहिं लेन चल्यो अगुआई ।
द्वार देश ते चलि कछुदूरी । देख्यो राम लखन छबि पूरी ।
निरखि राम मिथिलेश महीपा ।कियो प्रणाम सिधारिसमीपा
मुनि मंडली महीपति वन्दे । राम लषन लखि भये अनदे ।।
लक्ष्मीनिधि अरु लषन उदारा । किये विदेह प्रणति सुकुमारा ।
दो०-सबहिं प्रवेशेउ हरषि नृप, धनुष यज्ञ थल माहिं ।
राम लषन मधु माधुरी,को कबि वरणि सिराहिं।।
कमल नयन सुठि नाशिका, चिबुक चारु सुकपोल ।
अलक झलक कुण्डल मकर, अधर अरुण मनिलोल ।।
गज मणिहार हिये लसैं, बीच पदिक मणि भास ।
घन उडगन बिच दामिनी, ता मधि नवग्रह वास ।।
बाहु ललित वाजू जटिल, कंकन पहुँचि अनूप ।
कटि रसना मंजीर पद, ठवनि युवा मृग भूप ।।
मुनि पद वंदि चले सहज, हिये न हरष बिषाद ।
हरषे सज्जन भूप सब, मलिन भये मनुजाद ।।
।। अपनी-अपनी भावना के अनुसार दर्शन ।।
देखि राम सब सभा सुखारी । पायो सर्बस मनहु मुद भारी ।।
जा विधि भाव जासु मन माहीं । ते तस देखेउ रघुपति काही ।
देखहिं महाबीर बलवाना । बज्र देह धरि अहइ महाना ।।
नृप वर वेष असुर जो आये । राम लखै काल के भाये ।।
रहे वीर जे वर नर भूपा । देखे रुद्र सराहन रूपा ।।

नारि बिलोकहिं निज मन जैसा । मूर्तिमान सिंगार उभय सा
पुर नर लखै राम रस रूपा । कोटि मदन मन माह अनूपा ।।
दो०-विदुष बिलोकहिं राम कहँ, विश्व विराट स्वरूप ।
मुख सिर कर पग अमित हैं, वरणि न जाय अनूप ।।
जोगिन लखै एक रस रामा । आतम परम सुख सतचित धामा
जे निमि वंशी नर अरु नारी । देखि स्वजन सम होहि सुखारी
दम्पति श्रीमहाराज विदेह । लखहि राम कन्या पति नेहू ।।
जनकलली सहसखिन बिलोकति। उरअनुराग लजाय सुरोकति
महाभाव रस रूप किशोरी । लखि रामहिं सुख सिन्धु हिलोरी
दो०-शारद शेष गणेश कबि, शिव विधि वेद पुरान ।
सिय हिय प्रेम सुभाव सुख, कहि न सकत कछु गान ।।
चहुँ फेरि नैननि फेरि पुनि हँसि हेरि बोले राम ।
मिथिलाधिराज गुरुदेव हमारे बैठे कौने ठाम ।।
बोले बिहँसि मिथिलेश जो अति मंच तुंग विशाल ।
कमनीय निर्मित नाग नग तापर गुरुदेव तव लाल ।।
असकहि लषन रघुनाथ कहँ लै जाइ अति सुखछाय ।
मुनि पद कमल सिरनाय दिये दोनों भाई बैठाय ।।
राजत राज समाज महँ, कौशल राजकिशोर ।
सुन्दर श्यामल गौर तन, विश्व विलोचन चोर ।।
देख लोग सब भये सुखारे । एकटक लोचन चलत न टारे ।
हरषे जनक देखि दोउ भाई । मुनि पद कमल गहे तब जाई ।

करि विनति निज कथा सुनाई। रंग अवनि सब मुनिहि देखाई
निजनिज रुचि रामहिंसबदेखा।कोउन जानु कछु मरमविशेषा
भलि रचना मुनि नृप सन कहेऊ। राजा मुदित महासुख लहेऊ
तहाँ देख सिय आगम बिचारी। बरषि प्रसून बरषहीं नारी॥
छं०-अवसर बिचारि भूपति विदेह निज सचिव बोलि सनेह।
रनिवास जाय दीजै जनाय सिय माता सीतहि पठाह॥
सियधनुष पूजि जब करि फेरी। तब हम सुनाइहैं प्रनकरि टेरी
दो०-शिव धनुष पूजन हेतु सिय, आवैं इत अतुराइ।
सुमति सचिव शासन,सुनत दिये रनिवास जनाइ॥
पति अनुशासन सुनि तहाँ, हुलसि सुनैना रानि।
चतुरी सखी बुलाइ कै, बोली मंजुल बानि॥

॥ धनु पूजा हेतु श्रीकिशोरीजी का आगमन॥

धूरि जटी के धनुष को, पूजन साज लिवाय।
जाहु जानकी लै अवहिं, शुभ श्रृंगार बनाय॥

॥ चौबोला छन्द॥

इत सखी साजि श्रृंगार सिया को मंडप महँ लाई।
पिक बैनी कर गान महा आनन्द समाई॥
अद्‌भुत सिय छबि देखि थकित सब सभा विमोही।
सज्जन मन अनुराग दुष्ट मति सोच समोही॥
वरमाला कर कंज सुठि सखिन मध्य सियराज।
सुखमा तनु धरि अमित मधि, परतम सुषमा भ्राज।

सुर पति गज विधिहंस निरखि गति लाज समाये।
तन दुति सिय की निरखि दामिनी अंग छिपाये॥
सँग सोहि निज सखी प्यारि स्वयंवर छवि अति छावही
कोइ स्वर्ण छड़ी करन कोई सरस बैन उचारही॥
कोऊलिये झारी कनक थारी, लिये मँजन कोय।
कोउ लिये माल विशाल कर उरमाल कोउ मुदमोय॥
हेम की मणिमय जड़ी कोइ छड़ी लीन्हे पानि।
बोलत चली आगे अली शोधक लनी छवि खानी।
गहगहे बाजत गावत गीत मंगल किये मंडल मंजु।
कोउ बाल विरद बखानती गति ठानि गजगति गंजु
एहि भाँति प्रविसि रंगभूमि विदेह सुकन्या आय।
मनु नखत मंडल में अखंडल पूर्ण चन्द्र सुहाय॥
उठि उठि सबै देखन लगे भाषत परस्पर बैन।
मिथिलाधिराज ललीभली आवति चली चितचैन।
कोउ कहहिं अवहिं रहहु दुहिता करहु कस बँकवाधि।
बैठे रहे मिथिलेश मंदिर ठानि अचल समाधि॥
जे रसिक साधु सुजान भूपति सुनत बचन कठोर।
ते देत उतर उमगि अमरष घोर करि तहँ शोर॥
हम सब लरब सिय हेतु हठि घर रहे बैठि विदेह।
सिय ओर ताकत मारि बाणन करब छाती बेह॥
दो०-सिया कोलाहल सुनि डरी, खड़ी समाज मँझार।
चितवति है चिहुँकित चित, कहँ है राजकुमार॥

।। चौबोला छन्द ।।

चाप समीप गई बैदेही सखिन समाज समेता ।
राजन लषण ब्याज निरख्यो तहँ उभय भानुकुल केता ।।
लागी पूजा करन धनुष की मन रघुपति पद लागा ।
धूप दीप नैदेद आदि सब दीन्हो सहित विभागा ।।
जेहि दिशि भानुकूल नायक तिहि दिशिहूँ सिय ढ़ाठी ।
कर सों पूजति शंभु सरासन हिये राम रति बाढ़ी ।।
कर सों फेरति धनुष आरती मन सो प्रभुहिं उतारै ।
मानहुँ सबकी लगी दीठि गुणि आरती मंत्रनि झारै ।।
हेत प्रदक्षिण घूमि के जब प्रभु सन्मुख आवै ।
करत बात अलिन के ब्याजे तहाँ कछुक रूकि जावै ।।
यहि विधि चारि प्रदक्षिण देके कियो प्रणाम पुनीता ।
मनही मन विनवति महेश को समुझि पिताप्रण सीता ।।
कछुक मानि आनंद जानकी धनु पूजी तेहि काला ।
चली बहुरि जननी समीप कहँ लै सखि बृन्द विशाला ।।

दो०-अवसर जानि विदेह तहँ, बंदी जनक बुलाय ।
शतानंद अभिमत सहित, शासन दियो सुनाय ।।

समय जानि जब जनक बुलाये । बन्दी विरद कहत तहँ आये ।
कह विदेह मम प्रणहि सुनाई । आज अंत दिन कहहु बुझाई ।
सुनत बंदि तुरतहिं चलि दीन्ही । नृप समाज बोलन चितकीन्ही

।। प्रण सुनाना ।।

सुनहु सकल नृप सभा मझारा । कहहिं नृपतिकर सतप्रणसारा

शंभु चाप बड़ गरूअ कठोरा । त्रिभुवन विदित महावरजोरा
राबण बाणबीर वहु आये । देखि चाप सब गवँहिं सिधाये ।
तोरहि धनुष आज जो राजा । सीय बरहिं सो बनि कृतकाजा
विजय माल सीता पहिरावइ।कीर्ति विजय सो सबबिधिपावइ
दो०-जानिय जिय अंतिम दिवस, मनहूँ भरि उत्साह ।
यतन करहु खंडन धनुष, सुनहु सकल नरनाह ।।
बीते अवधि आज सब सुनहू । विफल प्रयास सवन्हकर सुनहू।
सुभट सुरक्षित रतन अटारी । बैठी सिंघासन सिय सुकुमारी।
सखिन्ह मध्य जस सोह सुहाई । लखहु अमित चंदा छबिछाई।
पानि सरोज लिये जयमाला । बैठी करत प्रतीक्षा काला ।
अमित प्रभाव न कछु कहि जाई । तेज आपको विश्व जराई ।
रूप राशि गुनशील अपारा । धर्म सुकृत सुख यशहिं पसारा ।
कहहु काहि यह ईश्वर करहीं ।धनुष भंजि जो शुचिसियबरही
अस कहि वन्दी दुंदुभी दीन्हा ।मेघ शब्द सब कोउ सुनिलीन्हा
दो०-पुरवासिन्ह की हिय दशा, प्रीति रीति सरसात ।
काह कहैं कबि बुद्धि पर, मनहुँ वहाँ नहि जात ।।
श्यामल रघुबर गौर किशोरी । देखि सबहिं भै प्रीति अथोरी।
नैनन देखहिं युग छबि मोही । प्रीति मनहुँ बहु तन धर सोही ।
अति अभिलाष सवन्ह के एही । सोहन श्याम योग वैदेही ।
जनक लाड़िली लायक रामा । जानि न जाय काह परिणामा।

॥ कवित्त ॥

पच्छिम ही दिशा के नरेश महाबली दोउ ।

उठत विबाद भयो आपस में भारी है।
बीच मकरंद करि कहयो बल भनौनिज।
ताको बल भारी सो प्रथम अधिकारी है।।
भके गज तीन बल कह्यो एक चारि सो मैं।
तुरत मँगाई आगे दिये दान धारी है।।
कही मकरंद द्वंद कीजै अजमाइ बल।
चाप ढिग जाइये निवेदन हमारी है।।
चल्यो चौगजी धाइ धरयो दोउ दशन कर।
कर में लपेति फेंक्यो भयो नभ चारी है।।
तमकि धायौ त्रिवली बली के समीप त्यौ है।
लपेटा सुडमुँड बदन पसारी है।।
भयो हाहाकार देखि-देखि डरै लोग सब।
पकड़ पीलवान लै गयौ बल भारी है।।
भक्त नृप बोले या चाप आप शंकर को।
दाप निज करौ याहि धरै जो खरारी है।।
बिहँसि मकरंद बन्दि बोल्यो विदेहजू सो।
भइहैं उचित चित धोखो जिन आनिये।।
चाप महादेव जू कौ बड़ो देव जानौ याहि।
प्रेरक प्रसिद्ध बलिदान लियौ जानिये।।
धारयो तो सोइ चाप आप शिव सेवै जाहि।
और को मनोरथ सो पाप जाप मानिये।।

तीन काल जानि आप सब रीति रुड़े,
पूड़े लेई सजे जो जो राउउर ठानिये ॥
इतने हि आयो है सुरारी असिधारि कर,
हेरि फेरि देखे निज रूप को छिपायो है ।
गुँज तौं प्रचारि वल पुन्ज कहो कौन तुम,
नाम निज कहौ सुनि कोप उर धारो है ॥
कहि तब गुंज जश पुंज न छिपावैं नाम,
दोषी ते दुरावे रूप छलि छोट तायो है ।
तब कहि मेरा इतने ही चित चेत आयो,
कहि एक बीर स्व जननी को जायो है ॥
बोल्यो गुंज अहो एक बीर दस कंध अहै,
और पास में कोउ श्रवण में न आयो है ।
तब सो विचारि मन बन्दिवर बुद्धि अहो,
तर्क वेद पाठि कछु जाननी सो लायो है ॥
प्रगटानौ है रूप निज भूप भय मान उठे,
जोरि जोरि हाथ प्राण उठही में ठायो है ।
कहि मन बन्दि भई बात अति मन्दी,
अब याको उपाव सहस बाहु अजमायो है।
गुँज मती पुंज रचि वाने एक युक्ति तब,
कहि अहो आये यो सहस बांहु बीर है ।
वाको सात बीस की पच्चीस हूँ कि तीस हूँ की,
तीस खीस मै उठाई धरै योधा बड़ौ दीठ है ॥

बोल्यो दस भाल कोऊ असुर को साल आयो,
आरत सुनायो शब्द भई उरपीर है ।
इतने हि कहत परायो है गगन मगन,
यो लोग गयो ज्यो प्रलय को समीर है ॥

॥ रोला छन्द ॥

गयो असुर तब उठे भूप भट सठ उर दापा ।
तमकि तमकि ताकि धरै टरै नहिं नेकहूँ चापा ॥
हारि मानि उर भूप नारि नीची चलि आयी ।
बैठे अपनी ठौर मौन निज भरम गमायी ॥

॥ छन्द तोतक ॥

सुनिके मिथिलेश महाप्रण को,नृप मोद भरे धनु तोरन को ।
भुज दण्ड उमेखी उठे तुरंते,धनु त्रीन गुनो गारूता गिरिते ॥
कोउ मोछन पै नृप ताउ दये, कोउ मन्दहिं मन्द मिजाजभरे।
कोउ बाहु सकेलत धाये पड़े, कोउ भूप सरासन सौंह गये ॥
कोउ आपस में झगड़े करते, यक एक उठावहु क्यों डरते ।
मिल के सब चाप उठाबहुना, एकबार समीपहि आवहुना ॥
तिनिमें कोउ मल्ल महीप रहो,पुट जाय धनुषहिं पानिगयो ।
करिजोउ महाअतिशोर कियो,मनुखैंचि सरासनहिं ऐचिलियो
गिरिगों मुंह के भरभूमि तहाँ,चलि बैठे पराय लजाये महा ।
कोईदेखिमहीप धनुषउठायो नहीं,नजायसक्यो तेहि लाजकियो

॥ सवैया ॥

ज्यों ज्यों करै नर नायक जोर हरै पुनि आसन बैठहि आई ।

स्वेत भरे मुख हारे हिये, वल पौरुष कीर्तिहिं गेह गमाई।
त्यौं-त्यौं सवै मिथिलापुर के जनक राजन को हँसि हेरिढ़िठाई
श्रीरघुराज मनावैं विरंचि दलैं शिव के धनु को रघुराई॥
दो०-कीर्ति बल विक्रम विगत, नृपन देखि करि हाँस।
कहहि लोग भूपन जिमी, विन विराग सन्यास॥
तमकि धरहि धनु मूढ़ नृप, उठइ न चलहिं लजाइ।
मनहु पाइ भट वाहुबल, अधिकु अधिकु गरूआइ॥
भूप सहस दसएकहि वारा। लगे उठावन टरइ न टारा॥
डगइ न शम्भु सरासनु कैसे। कामी वचन सती मनु जैसे॥
सब नृप भए जोगु उपहासी। जैसे विनु विराग सन्यासी॥
कीरति बिजय बीरता भारी। चले चाप कर बरबस हारी॥
श्रीहत भए हारि हियँ राजा। बैठे निज-निज जाइसमाजा॥
नृपन्ह बिलोकि जनकु अकुलाने। बोले बचन रोष जनुसाने॥
दीपदीप के भूपति नाना। आए सुनि हम जो पनु ठाना॥
देव दनु जधरि मनुज सरीरा। बिपुल बीर आए रनधीरा॥

॥ बचन जनकजी ॥

दो०-कुअँरि मनोहर विजय बड़ि, कीरति अति कमनीय।
पाव निहार विरंचि जनु, रचेउ न धनु दमनीय॥

॥ कवित्त ॥

दिग्गजन कानन लो कीरति करन हार,
राजन समाजन में ना कोई वीर बाँचा है।

जाहु जाहु भूप सबै मौन सी चलैं,
मुदित मजे में मौज कीजै पौढ़ि माँचा है ॥
रघुराज आज वसुधा में कोई बीर हो तो,
पुरतो हमारो प्रण धर्म को न काँचा है ।
ताते अस लगै मोय धनुष तोरैया वीर,
कुँवरि वरैया न विरंचि विश्व राँचा है ॥
दो०-तजहुँ आस अब ब्याह की, जाहु भवन नरनाह ।
लिख्यो न प्रण पूरे बिना, वैदेही का व्याह ॥

॥ लखनलाल जी बचन ॥

बैठ्यो सुजानु मनौ मृग नायक, श्रीरघुनायक के दृग देखैं ।
कंपत गात न आवत बात; अघात अमर्ष करै अति शेखैं ॥
श्रीरघुनाथ कमान सी भौंहे, लखै तिरछोंह विदेह विशेखैं ।
रामकी भीति सो बोलि सकै नाहिं,राखिसकै नहीं रोष अलेखैं
दो०-तहँ विदेह के बचन शर, भये लखन हिय पार ।
जोरि पाणि पंकज प्रभुहि, कीन्हो विनय उदार ॥
सुनहुँ दिवाकर कुल कमल,हौं तिहरो लघु भाय ।
जन्म पाय रघुवंश महँ, अस को सकै सहि जाय ॥

॥ कवित्त ॥

कमल नाल के समान चाप की चढ़ाई कर,
छत्रक के दंड के समान तोरि डारो मैं ।
करतों निरुत्तर जनकजी को नीके यौ पै,
इहि वल फल पाय अतिहीं बिचारो मैं ॥

प्रभु की सपथ पूर्वोक्ति जो करो ना तो पै,
फेरि धनु हाथ भाँय कहि में न घारो मैं ।।
कन्दुक समान ब्रह्माण्ड को उठावौं नाथ,
काँची मृदु घट के समान फोरि डारी मैं ।
सोरठा-मन्द मन्द मुस्काय, रघुनन्दन रनधीर मणि ।
नैनन सैन चलाय, किन्हो वारन बन्धु को ।।
दो०-प्रभु नयनन की सैन लखि, लखन वंदि पद कंज ।
भये मौन छवि भौन तहँ, करि महीप पद गंज ।।

।। कवित्त ।।

अरुण नयन जब लषन बखाने वैन,
सिय हिय प्राची सुख सूर प्रगटाने हैं ।
लोक पाल माने मोद सुकबि बखाने यश,
मिथिला नगरवासी धीरवर जाने हैं ।।
रघुनाथ मंद मंद मुदमुसक्याने मन,
विश्वामित्र पाणि पीठि फेरे सुख माने हैं ।
मिथिलाधिराज सकुचाने त्यों डराने भूप,
बाहरी समाने जल खग से सकाने हैं ।।
विश्वामित्र महामुनि ज्ञानी । बोलत भे अवसर जिय जानी ।।
सुनहु विदेह भूप मति माना । जो अब तुम ये बचन बखाना ।।
सो अनुचित रघुकुल मणि आगे । इनको वचन वाण समलागे ।
लखन कही सोऊ लरिकाई । वचन वदत कहुँ बीर कहाई ।।
जो अनुसासन होइ तुम्हारे । धनु समीप अब राम सिधारे ।।

करहिं जतन तोरन की येऊ। और न जाहिं भूप तहाँ केऊ ।।
मख कौतुक देखन चित चाये। मेरे संग कुँवर दोउ आते ।।
धनु दरशन परसन अभिलाषा। येऊ अपने चित करि राखा।
जो राउर अब होय रजाई। धनुष समीप जायँ रघुराई ।।
दो०-सुनि प्रिय विश्वामित्र के, बचन विदेह बिचारि।
बोल्यो पद वंदन करत, नयन बहावत वारि ।।
का कहिये मुनि नहि कहि जाई। कोमल कुँवर धनुष कठिनाई
प्रण परिहरे न होत प्रवोधा। हारि रहे जगती के योधा ।।
जो मम भाग्य विवस रघुराजू। तोरहु शंभु सरासन आजू ।।
तौ मुनि इन्हिं छोड़ि मम बाला। काके गल में जयमाला ।।
तुम जानहुँ हमरी गति सिगरी। जानहुँ सोउ वात जो बिगरी।
समय सुहावव जानि पुनीता। बोले रामहिं परसि सुप्रीता ।।
उठउ लाल धनु निकट सिधावहु।भंजि ताहि नृप त्रासमिटाबहु
सुनत राम गुरू मुख वर वानी। कीन्ह प्रणाम न कछुहियआनी

।। मुनिजी आज्ञा रामजी का चलना ।।

गुरु पद पंकज पुनि प्रभु लागे। सहित मुनिन सन आयसु मागे
गुरु निदेश अघटित घटवाऊँ। होनहार हठि तुरत मिटाऊँ ।।
गाधि तनयशुभ आशिष दीन्हीं।विजय पत्र जनुकरलिखदीन्ही
पुनि-पुनि चरण वन्दि रघुवीरा। सहजहिं चले हरण जनपीरा
गज मदमत मन्द गति कारी। रसरस चलत मदन मन हारी।
दो०-कमल नैन सुठि नासिका, चिबुक चारु सुकपोल।
अलक झलक कुण्डल मकर अधर अरुण मनिलोल ।।

गज मणिहार हिये लसैं, वीच पदिक अति भास।
घन उड़गन विच दामिनी, ता मधि नवग्रह वास॥
बाहु ललित बाजू जटित, कंकद पहुँचि अनूप।
कटि रसना मंजीर पद, ठवनि जुवा मृग भूप॥
मुनि पद वँदि चले सहज, हिये नहरष विषाद।
हरषे सज्जन भूप सब, मलिन भये मनुजाद॥

॥ छन्द ॥

जनु सिंह सावक मंदरहि तिमि चलत रघुवर मंचते।
मनु मत्त मोहत मंद गज कहँ चलत कोमल कंजते॥
छवि मूर्ति राजित राजरस तम हरन जनु दिनकर चले।
पुनि लाज लाजित व्याह के सुठि सकुच हरषन चखभले।

दो०-नयन लजीले अति भले, ताकत जाकी ओर।
मुख प्रसन्न मृदु हाँस से, देत सबहिं रसवोर॥

चलत राम सुर वरषहिं फूला। जय जय कहि मुद मंगल मूला
पुर नर नारि मगन अति होहीं। चलत राम पुलकित अँगसोहीं
रामरूप सौंदर्य निधाना। सुठि सुकुमार न जाय बखाना॥
माधुर सिन्धु सुखद सुठि श्यामा। कोटि काम लावन्य ललामा
लखि लालित्व वरनि नहि जाई। संकेतहि करि कछुक जनाई
पुनी सुमोहन रूप अकामा। सबहिं लोभायो ललित ललामा।
सुठि सुकुमार देखि नरनारी। करहि हृदय भ्रम संयश भारी
पंचदेव विनवहिं अति प्रेमा। होहिं सदा रघुनायक क्षेमा॥

सकल सुकृत फल सौंपि सुचाहैं । तोरहि राम धनुष सुखमाहैं।
कमल नाल इव धनु टुटि जाई । चाहौं सकल सोदेव सहाई ।।

॥ पुरजन बचन ॥

जनकप्रणाम कीन्हमुनि राजहिं।विनय करतअति प्रेमसुलाजहिं
नाथ राम बहुत सुकुमारा । चाप कठोर कराल अपारा ।।
वार वार विनवहुँ कर जोरी । मंगल मंगल राम को होरी ।।
सियसों अधिक रामकर सोचा ।सत्य कहहुँ तजि सकलसंकोचा
दो०-मंगल देखहिं राम नित, मोर इहै अभिलाष ।
सब समर्थ मुनिवर्य है,सब विधि राम सुपास ।।

॥ चौबोला छन्द ॥

भूमि व्योम के बीच जिते भट भूप अनूपा ।
किन्नर सुर गंधर्व असुर आये रचि रूपा ।।
भरे सभा के बीच हिये अभिलाष उघारी ।
इन्हैं निरखियों भये ऊडगन उदय तमारी ।।
पुनि लखि लच्छन अंग के, हम कीन्हें विस्वास ।
विजय वंधु के जोग ये, और सबै उपहास ।।
एक छत्र नृपताइ आइ रेखा इनके कर ।
अजित सर्व जित रेख दीर्घ आयु सुभोगकर ।।
इनहीं के वरमाल लाभया लिख्यौ विरंची ।
यहि तोरैं हर चाप दाय सबहीं को वंची ।।
पुरुष प्रसिद्ध पुरान वदे हम, नीकौ लियौ विचारि ।
कछु न संशय कीजिये, तोरैं धनुष पुरारि ।।

॥ श्रीमाताजी बचन ॥

दो०-छोटो छविलो सावरो, कोशल राजकिशोर।
मत्त मतंगज गवन करि, चलो जात धनुओर।
झाँकि झरोखन ते तहाँ, जनकराज पटरानि।
सखी सयानि बुलाय ढ़िग, बोली विस्मित बानि॥

॥ सवैया ॥

ये हो सखि अवधेश कुमार, वड़ो सुकुमार लगे शुचि लोना।
कौशिला वारो तथैव हमारो, विलोकि कै कोई करै नहीटोना
चलिकै रघुलाल के मोल विशाल, में दै दै सुनील दिठौना॥
काजकियो मुनि को रघुराज पै, मोहि तो लागै मरालसोछौना
युवा वयस मृदुगात अनोखो। कोशल पाल वाल चित चोखो॥
महाभीम भूपति बलवारे। राजकुँवर सम कौन निहारे॥
बैठे शीश नवाय नरेशा। सके न उठाय धनुष महेशा॥
लखुसखि छोटेकुमार छबीलो।चलो जात जिमि गजगरवीलो

॥ छप्पय ॥

सखि नृप सुत सुकुमार अधिक शिव चाप कठोरा।
लखि मन परम अधीर वात यह होत अजोरा॥
परम विवेकी भूप मोर पन गह्यौ विसेषै।
नेक न आयो क्षोभ यह मृदु मूरति देषै॥
जग की जीवन मूरि जो कछु इनको होय।
मन पछताइये जनम लौं भली कहैनाहिं कोय॥

अवहिं कछु नहि भयो कहो कोउ नृपहिं बुझाई ।
नृप बालक सुकुमार किये हठ कछु न भलाई ॥
बड़े बड़े भट भूप हारि बैठे न बसाई ।
बेधि सकें नहि बज्र छिद्र तहँ सूत सलाई ॥
जो अति हठ निज बचन को तो धनुकर परसाई ।
वरै सियावर साँवरो जयमाला पहिराइ ॥
बड़ौ अचंभो होत चाप कह हस्यो विवेक ।
भोरी भई सब सभा बूझ नहिं हंश विवेकू ॥
नाहक जुरि सब भीर तिन्है अव बिदा कराई ।
सुन्दर वर सिय जोग सो वरौ अति सुखदाई ॥
भलि भाँति व्याहिये सुता ज्यौं जगमें सुजस छाय ।
हितू हमारो होय सौं तो अस कहै बुझाय ॥
पन जस करतो कहा सखी यतौ अधिकारिये ।
कंचन को गिरि देखि कहा छाती पर धारिये ॥
प्राण पियारी सुता शील सुषमा की रासी ।
ताके सुख संतोष करै चाहै जग हाँसी ॥
सव मन मानी सब कही सिय साँवर वर जोग ।
सो हौं सो कैसे करै कहिकै वात अजोग ॥
जोपै होवति संशय वाता । नाहीं पठवति मुनिवर ज्ञाता ॥
ये वाल बुद्धि तेज के भवना । जानि परय असमुनि धनुभँजना
अवशहि तोरिहैं धनुष विशाला ।सिय पहि रहैं राम उर माला

दो०-सुनि जानकी जननी वचन, बोली सखी सुजानि ।
देवि मोरी विनती सुनौ, मनकी तजहु गलानि ॥

महरानी जेनि सोच कुँवर नीकै धनु तोरैं ।
वत्सल तुम्हारौ भाव हरौ बालक वय भोरैं ॥
प्रबल प्रतापी अहैं सखी देखत के छोटे ।
इनके भुजबल सहस अनेकन भट भुवि लोटे ॥
गिरि सम मत्त गयंद बहु के हरि बालक देखि ।
भागत अति भय मानि कै त्यौं प्रताप गति लेखि ॥
थोरी हूतै थोर सूर ससि परित परेखौ ।
हरे विश्व तम तोम ब्योम वसि त्यौंउर देखौ ॥
मंत्र वरन द्वै तीन पंच षट वीज विसेषौ ।
ताके वस नरभूत विधि सुर हरि सेषौ ॥
अरि सासनि करि तेज बल राजत बाल नरेश ।
रानि न लेहि लघु मानिये नर सम नर न विशेश ॥

॥ जानकी बचन ॥

चाँप समीपहिं जात, जनक नन्दनी प्रभुहिं लखि ।
अतिशय जिय अकुलात, प्रेम विवस भूली सुरति ॥
यहि विधि सोचत गौरी मनाई। मनही महिं शुचि शीश नवाई
देवि वचन तव बृथा न होवै । धनुष तोरि रघुपति मुख जोवै।
सुनहु शिवाशिव विनय हमारी। होय हरूअ धनु राम निहारी।
मनक्रम वचन राम की दासी । कीन्ह हिये प्रण मैं गिरिजासी।

राम बिना नहिं राखहिं प्राणा । जानहु सब शिवशिवासुजाना
जानि सियहिं नव नेह बिहाला । रघुपति ताकेउ धनुषविशाला
मनहु बतायो धीरज धरहू । विन श्रम चाप खंड द्वै करहू ।।
सोरठा-यहि विधि करत विचार, धरत धीर नहिं जानकी ।
लखि अवधेश कुमार, कोटि कल्प वीतत पलहिं ।।

॥ चौबोला छन्द ॥

सिया लखत रघुलाल सखिन मधि दीठ छुपायौ ।
बढ़यौ प्रनै नव नेह प्रेम प्रगटत हूँ दुरायौ ।।
मनहि मनावत सिवा सहज करूना गुन रासी ।
शंकर चाप कठोर सुरति करि अधिक उदासी ।।
कछु मिस करियै काँत लै चतुर सखी समुझाइ ।
धीर धरावत भीरु लखि लै लै गोद बिठाइ ।।
अली मानु विश्वास सपन मैं आजुहिं देख्यौं ।
ये नृप सुत गलमाल दई धनु खंडित पेख्यौं ।।
सुर दुंदुभी बजाइ कलप तरु सुमन वरेष्यौ ।
ह्वै है साँचहि साँच सखी दशा पाँच परेख्यौ ।।
इतने ही वाईं भुजा सिय की फरकन लाग ।
चाप निकट पहुँचे नवल निरखि कहौं अनुराग ।।
चाप निकट जब गये राम रवि अन्वय मंडन ।
निरखि लखन जिय संक चाप सहलोकन खंडन ।
चाँप अटनि महि चाँपि बीर बोले बरवानी ।
घन इव अति गंभीर दुष्टजन को भयदानी ।।

सुभट तिलक रघुवंश मनि, खंडत हरको दंड।
मम दिनेश चित चेत करि शेष धरहु ब्रह्माण्ड।
दो०-क्षनक्षन वीतत कल्प सम, धीर धरत नहिं प्रान।
सीय दशा लालहिं लखैं, मन वाणी पर जान॥

॥ चौबोला छन्द ॥

राम सिया मुख देखि धनुष पुनि केहि विधि देख्यौ।
वैनतेय लघु व्याल सिंघ गोमाय समेख्यौ॥
पुरजन परिजन सहित प्रिया अति व्याकुल जानी।
लाघव लियौ उठाइ चाप विनु श्रम पुनि तानी॥
तुरत कियौ धनु खंड तब शब्द रहयौ अति छाइ।
महामोद मंगल भयौ सुर दुंदुभी बजाइ॥
दो०-लेत चढ़ावत खैंचतहि, लखै न देखन हार।
संप्रवेग रघुनाथ की, निमिष लगी नहि वार।
धरयो राम कर कमल कठिन को दंड पुरारी।
गगन गोल सम भयौ दमलि दामिनि इमि भारी॥
होत खंड धुनि चंड प्रलय में धुनि अनुहारी।
विकल भये सुर असुर चकितयौं रह्यौ विचारी॥
दिग्गज किये चिक्कार अति, महिसागर डगडोल।
कचक चाँपहिं अहि कमठ गहि गच गचायँ गोकोल॥
भभरि भानु हय भगे सारथी सकल भुलानी।
क्षीर साइ प्रभु जगे नींद भयमानि परानी॥

।। धनुष भंग ।।

रमा रमकि भय मान कंत गल त्यौं लिपटानी ।
विधि वानी के हंस क्षमुख वाहन गति ठानी ।।
भगे भरकि शिव नन्दिहूँ उड़े गरुण अकुलाय ।
गन मूषक खोदत मही अहिमुष निरखि डराय ।
पुनि जय जय धुनि सुनी भयोचित चेत सवनके ।
तोरयो रघुवर चाप संभु कौ कोमल तन के ।।
हरषहिं देव वरषहिं पुहुप दुन्दुभि हनहिं सुभाय ।
जय जय वोलत सुख छये,रामहि रमत अघाय ।।

धनु दुइ खंड राम कर दीन्हा । हरषे सकल पाइ जल मीना ।।
विनु श्रम सहजहिं विन सुख फूले। ठाढ़े राम सबहिं अनुकूले ।।
तुरतहिं आतुर श्रीनिधि लाये । रत्न सिंहासन मुनि मन भाये।।
रत्न जड़ी धनु वेदी बीचा । धरेउ भावभरि प्रेमहि सींचा ।।
बैठे राम कृतज्ञ कृपाला । प्रणत पाल प्रण आपन पाला ।।
सिय सुख वरणि सकै नहिं कोऊ । शेष सारदा गणपति सोऊ।।
आनंद सिंधु मगन नरनारी । पाय सुकृत फल भये सुखारी ।।
क्षनक्षन देव वजाय नगारा । गह गह गगन भरेउ रवसारा ।।
शिव चतुरानन सिद्ध ऋषीसा । स्तुत करत विमानन दासा ।।
जय जय कहि बहु वरषहि फूला । स्रग सुगन्ध रंगहु मनभूला ।
नाचहिं गावहिं सुर वर वामा। कहि जय जानकि जीवनश्यामा
गगन कोलाहल आनँद छायो । देव मगन मन मंगल गायो ।।

पुर महँ वाजे विपुल निशाना। झालर झाँझ शंख घड़ीनाना॥
ढोल मृदंग भेरि सुखदाई। दुन्दुभि सुखद सरस सहनाई॥
दो०-जनक सुनयना मन मुदित, आनन्द हिय न अमात।
दम्पति निमिवर लाल की, सुख समृद्धि अधिकात॥
कही सुनैना जौन सखि, राम तोरिहैं चाप।
सो उठि पुलकि प्रणाम किये,मिली रानी उठि आप।

॥ छन्द ॥

पहिरे रही जो वसन भूषण जड़ित रत्न अपार।
सो दियो ताहि उतारि रानी तनक तन न सम्भार॥
गुरूजनन को वंदित सुनैना कहति बारहिं वार।
पूरण मनोरथ भयो मेरो, पूर पुण्य तुम्हार॥
तहँ सूत मागध विरद बंदी बिरद करहिं बखान।
तोरयो महेश को दंड दशरथ कुँवर सींक समान।
नारि करहि मुद मंगल गाना। सुनि सुनि होवे मोद महाना॥
नटहिं नर्तकी भाव बताई। प्रेम विवश तन दशा भुलाई॥
बरषहि सुमन नगर नर नारी। बैठे रामहि लषन सुखारी॥
करहिं निछावरि मणि गन चीरा। सबहिं लुटावत प्रेमअधीरा
अमित दान दीन्हे सब काहु। आरति करहिं मुदितमन माहू॥
पुरवासिन सुधि भूलि तनकी। नृप समाज हिय आनँदभरकी।
आनंद सिंधु मगन त्रैलोका। सुर नर मुनि सब संत असोका॥
दो०-सतानन्द आनन्द भरे, गये तुरत रनिवास।
कह्यौ जानकी जननि सों, अब कीजै अस आस॥

साजि शृंगार गावत मधुर, सरस नवेली बाल ।
सियहिं पठावहु राम के, मेलै गल जयमाल ॥

चली जानकी लै जयमाला । पहिरावन को दशरथ लाला ॥
सोहहिं सुदरि संगहजारन । सुर दारा सम किये शृंगारन ॥
महा भीर सब राज समाजा । खर भर मचि रह्यो दराजा ॥
सुनत सखिन मन मोद अपारा । सीतहिं चली लिवाय सुदारा
परत पाँवड़े मखमल शोभित।कनक खचित कोमल मनलोभित
मंद मंद पग धरति लजाती । सीता चली मनहिं हरषाती ॥
कर सरोज शोभित जयमाला।लसत सखिन विच मूर्तिरसाला
नख शिख शुभग मनोहर ताई । कहि न जाय मनही मन भाई
शशि सतकोटि सुभगप्रिय आनन।अमित कोटि शतलक्ष्मीवारन

दो०-अमित अण्ड सौन्दर्य प्रिय, सिमिट होइ इक रास ।
सिय शोभा इक अंशकन, लाजत कोटि प्रकाश ॥

अंगअंग दिव्य भूषण सोहे । लषत त्रिदेवहुँ मन तहँ मोहे ॥
कनक सूत्रवर साड़ि सुहाई । सुभग अंग अतिशय छवि छाई ॥
कंकन किंकिनि नूपुर बाजत । रुनझुन रुनझुन सामहु लाजत॥
सखिन मध्य सिय सोहति कैसी।छबि गन मध्य महाछवि जैसी
मंगल गावहिं सखी सहेली । लाजहिं तिन लखि रही नवेली॥
मधुर मधुर धुनि बाजत बाजा । भाँति अनेक सरस सुखसाजा
इतै सखिन सामाज पुनीता । आई रंगभूमि महँ सीता ॥
आवति सिय लखि उठी समाजा । किये प्रणाम भले सब राजा

यहिबिधिलखिसबसभाजुड़ानी ।कीन्हप्रणाम सियहिं सुखमानी
सबहिं हृदय अति होय उछाहा ।माल पेन्हावन लखै समाहा ॥

दो०-छरी हजारन संग में, रतन जड़ित सखि पानि ।
जय बिदेह नृप नंदिनी, बोल रही वर बानि ॥
रस रस चलती सखिन सँग,पहुँची रघुपति पास ।
देखि राम छबि ठटुकि करि,चित्र लिखीसी भाष ॥
सिया निरखि छबि राम की,वाढ़यो अति अनुराग ।
जुगल रूप गुन सम निरखि, सखी सराहत भाग ॥

देखि देखि मनमोहनि मूरति । प्रेम विवस तन दशा विशूरति
बरमाला कर कंज सिय जस जस नियराई ।
तस तस रघुवर अंग मोद अनुभव सरसाई ॥
ज्यों ज्यों विद्या लहै ब्रह्म अनुभव अधिकाई ।
जिमि संपति अधिकाइ मनोरथ मन बिपुलाई ॥
ज्यों ज्यों राका निकट बस शशि द्युती लखाई।
त्यों त्यों तन में तरुणता सरसत द्युति सरसाई॥

दो०-सखी सलोनी सीय को लाई रघुवर पास ।
जनु कादम्बिनि घन निकट दामिनी सहित हुलास।

॥ जयमाल पहिनेक सीताजी का जाना ॥

पहिरावहु जयमाल सिया सखी कहति मृदु बैना ।
उठै न कर तन प्रेम भर पिय छबि पागे नैना ॥
कर सरोज सिय के युगल सखि कर कंजनि धारी ।
जयमाला रघुलाल उर पहिराई मुद कारी ॥

पहिरावत जयमाल जब सिय पिय उपमा भास ।
माल नहीं सिय नेह की, अहै मनोहर पास ।।
दो०-माल नही ये जनकजा, सखि युत मों उरबास ।
कियो सोई दरसत अधिक, शोभा रंग विलास ।।
माल नहीं ये जनकजा, निज तन हारयो मोहि ।
अधिक नेह करि प्रान सम,हिय हारयो हम सोहि ।।
नहि मुकुता रबि द्रुम नही, है काहे की माल ।
सुकृत द्रुम फल सार की, अंतर सार विसाल ।।
सोहत जनु जुग जलज सनाला । ससिहि सभीत देत जयमाला
गावहिं छबि अवलोकि सहेली । सिय जयमाल राम उर मेली
सो०-रघुबर उर जयमाल देखि देव बरसहिं सुमन ।
सकुचे सकल भुआल,जनु बिलोकि रबिकुमुदगन।।
पुर अरु ब्योम बाजने बाजे । खल भए मलिन साधु सब राजे
सुर किन्नर नर नाग मुनीसा । जय जय कहि देहिं असीसा ।।
सोहति सीय राम कै जोरी । छबि श्रृंगार मनहुँ एक ठोरी ।।
सखी कहहिं प्रभुपदगहु सीता। करति न चरन परसअतिभीता
दो०-गौतम तिय गति सुरति करि, नहि परसति पग पानी ।
मन विहँसे रघुबंस मनि, प्रीति अलौकिक जानि ।।
जय जयरव अति गुँजगो, परी निसानहिं चोट ।
विविध भाँति बाजे बजे, दुंदुभि बजत सघोट ।।
मंगल गान होन तब लागा ।उमगि उमगि उमगत अनुरागा ।।
गौरी गनपति शिवहिं मनाई। राम संग सियहीं बैठाई ।।

राम सिया लखि सुन्दर जोरी। रची शारदा प्रीति न अथोरी
उपमा खोजत कतहुँ न पाई। छवि समुद्र मन बुद्धि डुबाई॥
वरषहिं सुमन छनहि छनदेवा।जय जय कहत करहिंशुचिसेवा
नाचहिं गावहि पुर नर नारी। किन्नर देव वधू सुख सारी॥
करहि आरती परम सुप्रीता। सकल नगर नर नारि पुनीता॥
वित्त विसारि करहि न्यौछावर। मंगल पढ़ै सबहि परमादर॥
जोरी सुभग निहारि निहारी। शान्ति पढ़हि सबविप्रसुखारी॥
मागध सूत वान्दि भल भाटा।युगल विरद वरनहि वहुठाटा॥
देखि युगल छबि त्रिभुवनवासी। भये मगनमन आनँद रासी॥
दो०-राम सिया शोभा निरखि, मगन सकल नर नारि।
पुरजन परिजन लोग सब, मुदित करत न्यौछारि॥

॥ सवैया ॥

सोहि रहे नखते शिख लो, मृदु केसरि रंग की सुँदर सारी।
भाल विशाल में लाल सो विन्दु करै पगमें घुंघुरु झनकारी।
राम विलोकि रहीं रघुराज, विदेहलली तनहूँ मनवारी।
कै कुज अंक मयंक मनो,लसै सोन जुही के निकुँज मझारी।
सोच्च संकोच विमोच भयो, सुख दुहुन के सरसात समाने।
दुहुँन की जुरी दीठि निशंक, मयंक दिनेश मनोदर साने॥
श्रीरघुराज भये दृगलज, हिये दोउ प्रेम पयोधि नहाने।
दोउ विचित्र छके छवि में,लिखे चित्र से जानकी रामसुहाने॥
मिटो कोलाहल गे जब भूपा। माच्यो मंगल शोर अनूपा॥
नैनन सैनन सों रघुराई। दई जानकिहि जान रजाई॥

मनही मन पद वंदन करिकै । साँवलि मूरति हिय महँ धरिकै
सतानन्द शुभ आयसु पाई । सबी चली सब सियहि लिवाई ।।
मंगल करहि सकल सुखदाई । चिरजीवी सिय कहैं सुभाई ।।
जय जय जय जय जयति पुकारैं। वरषहि सुमन सकल सुखसारैं
यहि विधि सिय जहँ मातु सुनैना। गईकछुक सकुचति हियऐना
दो०-करत गान सखि लै चलीं, सिय को जहँ रनिवास ।
वरमाला उर धारि कै, गवन महामुनि पास ।।
अति गह गहे वाजने बाजै । सबहि मनोहर मंगल साजै ।।
यूथ यूथ मिलि सुमुखि सुनयनी ।करहि गानकल कोकिलबयनी
सुख विदेह कर वरनि न जाई । मनहुँ दरिद्रन पारस पाई ।।
दो०-देवन्ह दीन्ही दुन्दुभी प्रभु पर वरषहि फूल ।
हरसै पुर नर नारी सब मिटी मोह मयसूल ।।
रामहिं चले मुदित मुनि पाही । जय जय सब कहहिं सुभाहीं।।
चलत लुभानि चाल रसाला । पहुचे गुरु समीप प्रण पाला ।।
कीन्ह प्रनाम हृदय हरषाई । लीन्हे मुनिन हिये छपकाई ।।
दीन आशषि हृदय हरषाया । पूर्ण काम नयन फल पाया ।।
पीठि पोछि शिर सूघी सुखारी । बोले बचन महातप धारी ।।
जीवहु युग युग सुन्दर जोरी । यहि विधि पुरवहु आशा मोरी।।
दो०-राम लखन दोउ वन्धुसह, कौशिक मुनि सुख पाय ।
हरषि चले निज वास गृह, जय जय शब्द सुछाय ।।
कौशिक उर सिंधु बढ़यो विच पुलकावली ।
निरखि राम इन्दु चन्द आनन्द भली ।।

सिया मातु अति होत दोउ वंधु बोलि निज पासा ।
विविध भाँति आदर करति आरति अधिक हुलासा ॥
वात्सल्य उमड़ी हिये, सो वरनी किमि जाई ।
सुता हूते अधिक प्रिय लागत दोउ भाई ॥
पुरजन परिजन लोग, मुदित करत न्यौचावर ।
मिटयो महाउर शोक, निज इच्छित पायो परम ॥

॥ जनकजी मुनिजी के पास जाना ॥

सबके हृदय अमित अभिलाषा । विधिवत लखै विवाह हुलाषा
समय पाइ पुनिते रहुत राया । कीन्ह प्रनाम कौशिकहिं जाया
पानि जोरि वर विनय सुनावा । नाथ कृपा शिवचाप नसावा
राम लखन मोहिं किये कृतारथ । पायो आज प्रमोद जथारथ॥
उचित होइ अव कीजिय सोई । चहत सवहिं परिणय सुखजोई
गाधि तनय कहँ सुनुनृप ज्ञानी । भयो विवाह लेहु तुम जानी ॥
भयो विदित नृप तीनहुँ लोका।तदपि करहू श्रुति रीतिअशोका
करि कुल रीति यथावत राजा । करहु विवाह बुलाय समाजा

दो०-चक्रवर्ति दशरथ नृपति, ले समाज उत्साह ।
आवहिं इत मिथिलापुरहिं, लखैं सप्रेम विवाह।
कौशिक सतानन्द कहँ, पूछिसि तिरहुत नाथ ।
धावन पठये अवधपुर, दै सुपत्रिका हाथ ॥
भलेहिं नाथ कहि नाय शिर, चतुर दूत बुलवाइ ।
मुनि कृत पत्र पवित्र दै, अगता दियो पठाइ ॥

मुख्य संदेश बहु विनय करि, वेग पधारो राय ।
विदित बड़ाई दीजिये, सकल भाँति अपनाय ।।

छ०-जिमि उचित राजन, विनय सौं अवधेश को बुलवाइये।
कोऊ प्रतिष्ठित निपुन धरके तिनहि वहुरि पठाइये ।।
करकै मनन विमल मनमाही । सतानन्द प्रति कहेउ तहाँही ।।
कुल उपरोहित तुम मतिवाना । वृत्ति प्रमान सनातन जाना ।।
भगवन कौशल नगर सिधावहु ।पतनिन युत दशरथ कहँलावहु
मित्र मंत्री मुख्य सँग लेहू । भ्रत्य चतुर परिचर्या जेहू ।।
भूरि द्रब्य पूरितवर वाहिन । लेहुँ यथा रूचि सब शुभ जाहिन
तव सेवन सो मिटहिं अँदेशा । शंकाकरव नकरत निदेशा ।।
श्रम न होइ मग चलत वराता । सखहीं सुख ल्यावहु प्रभुज्ञाता

दो०-शुभ चिंतक रघुवंश के, मुनिइन विनय सबनीत ।
सतानन्द गौतम तनय, वोले भलहिं संप्रीत ।।
भौ संमत सबके चित चाहा । कौशिक मुनि ने बहुत सराहा ।।

।। छप्पय ।।

येहि विधि इक छनमाहि सबहि नृप दै अनुशासन ।
चित्र मंत्रि परधान ताहि सन करत सभासन ।।
अवधपुरी तुम्ह जाहु वरातिन हित लैवाहन ।
अर्वरथ रजत कनक मनि रचित सुहावन ।।
अयुत अर्व सब कनकमय तथा जटित मनि रंग ।
अयुत सर्वरथ रचित वर केवल मनिमय अंग ।।

दो०-साँवकरन मूषित महा, जो जित कीजै वाजि ।
आयुत पद्म रथ ललित अँग,चिन्ता मनिमय साजि ।।
सुभग सिंगार नियोजिय, उच्चेश्रवा बहु वाजि ।
खर्व नील रथ रजतमय, कनक किंकिनी जाल ।।
कनक कलस उत्तम हयनि, भूषन रजत सुभाल ।
रथ संखिक भूधर सरिस, गजभूषित बहु भाँति ।।
अति उत्तम हय त्रिगुनिहिं, ललित वरन समपाँति
पंचगुणित पदचर सहित, चित्र चमूरचि भिन्न ।
नवल लाल की पालकी, कंचन मनिमय चिन्न ।।
जरित अँमारीं गंजनि पर, ललित विशाल विचित्र ।
चंदनमय रथ पालकी, अमित संवारौ मित्र ।।
गज रथ रुचिर तिखंड के, पंच सात के साजि ।
आयुत अर्व लै लीजियै, संग सवारी वाजि ।।
भूषण मणि बहु रंग की, विस्तर असंख्यनि भार।
भरि भरि संगहि लीजिये, खच्चर खामि अपार।।
संचल वाग अनेक पुनि, संचल सदन अपार ।
बहुत विनय करि वस्तु सब,आसु अवधि दरबार ।।
अवधि नाथ अतिसुख सहित, मगकलेस जनिहोय ।
सो सब जतन विचारियौ,आवैं करत सुखद सोय ।।

नाना वरन ध्वजन कर भ्राजन ।बाजैं सुभग मधुर धुनिबाजन
नट नर्तक वहु कौतुक कारी । चले अखंड सुलाभ विचारी ।।
भाग वड़ौं मानत स उमाहू । देवी मंगल खबर अगाहू ।।

आयधु पाई भोर नृपराई । अति सवेग रथ दियो सजाई ।।
भेट अमित देवन के काजा । और रथन धारायो राजा ।।
कछु सेवक कछु ब्राह्मण साथा । हृदय सुमिरि सियवररघुनाथा
रथ चढ़ि चले अवध सुख पाई । गौतम सुवन हृदय हरषाई ।।
दो०-नृप वचननि ते चतुर गुन, सजि सामा सब आसु ।
चित्र मंत्रि पहुँचे अवध, तीन क्रिये मग वासु ।।

इहाँ जनक शुभ समय बोलाये । नगर महाजन धनपति आये ।।
कार्य कुशल बहुगुनी विराजै । जिनहिं देखि विश्वकर्मा लाजैं ।।
गाधि तनय कह सबहिं सुनाई ।मम सँग राम लखन दोउ भाई
राम बिना कस अवध उछाहा । नेम चार कुल रीति निवाहा
करिहै मातु प्रेम सरसानी । यह संसय सव सुनहि सुजानी ।।
सम विधि रचना रचहु समाना । जाहि देखि सुरपुरी लजाना
होवै तुरत सर्वहिं सुन लेहूँ । अहै अवनिपति आयसु येहू ।।
वास करैं सुख सहसुख साजा ।भाईन भृत्यन सहित समाजा ।।
प्रथम लगन ते मातु उछाहा । जस जस प्रति दिन वढ़ै उछाहा
टीका नहछु परिछन प्रीती । जननि भवन जस करै सुरीती ।।
दूलह वेस बनाय सभ्राता । यथा लखहिं हिय हरषित माता ।।
दूलह सहित पयान बराती । देख मातु सुख सिंधु अमाती ।।
दो०-ताते मिथिला वाहिरहीं, शुचि सरि कमला तीर ।
अवधपुरी सम अवधपुर, रचना रचहिं गँभीर ।।
वनै अलौकिक मंडप व्याहा । देखि छकहिं विधि सह नर नाहा

रचहू नगर दिब्य चहुँ ओरी । वीथी हाट चौहटहिं अँजोरी ।।
गुनिन करन यावत निपुनाई । देखी सुनी पुरान महँ गाई ।।
सो सब निमि पुर होय प्रकासी । देखि छकै अवधपुरवासी ।।
कमला तटहीं नगर वनावा । देखि लजहिं सुरपति सुख पावा
नाम अयोध्या ताकर दीन्हा । पुरी अवधसम मनहर लीन्हा ।।
वारहिं इन्द्रपुरी शत तापै । सीय कृपा सब विधि सुख जापै ।।

दो०-हाट वाट सुन्दर सजेउ, राजसदन सुख ऐन ।
ध्वज पताक फहरन लगे, बजत चौंघट सुखदेन ।।
इतै चतुर सिल्पी अमित, लीन्हे तुरत बुलाय ।
पंचकोस मिथिला अवधि, छाड़ि रच्यौ मगजाय ।।
मिथिला कौशलपुर लगी, भो थल नगर समान ।
चाँदिर सम सुन्दर मंदिर, थल थल भोनिरमान ।।
वापी कूप तड़ाग वर, कनक विचित्रत घाट ।
कोमल अतिहीं फेनते, रुचिर सुधारौ बाट ।।
विविध रंगयुत वाटिका, अमीत सफल द्रुमिबेली ।
फूलनि द्रुम बहुरंग के, शोभा सुरभि सकेलि ।।
सदन सवारहु सकल अँग, चित्र रंग दरसाई ।
जोजन इक करि बीच लौं, अवधि नगर लौं जाई ।
इतै व्याह मंडप रचौ, कौतुक रंग अनूप ।
निरखि लहैं आनन्द जिमि, अवधि प्रजायुत भूप ।
गये विश्वकर्मा सकल, नृप अनुसान पाय ।
कोटि गुनी नृप वचन ते, रची सुरचना आय ।।

बोले महाजन सकल,लिय कहि नव रचना होय ।
हाट बाट चौहट गली, लखि वरात सुख भोय ।।
पुनि बोले गुनकार सब, सामा सहस प्रकार ।
जो विवाह के हेतु हैं, जोरिं भरौ आगार ।।
सदन वरातिन वास हितू, वनै अबधि लौ जाइ ।
असन वसन सज्या सुरभि, तहँ तहँ देहु भराइ ।।
इतते अरु पुर अवधि लौ मणि दीपक द्रुम पाँति।
रोपवावहु रचना सहित, दीपायन बहु भाँति ।।
चारु चँदोवा कनक पट, मणि झालर बहु रंग ।
तुरत तनावो अवधि लौं, नृत्य रंग तेहि संग ।।
हय गय स्वयंदन पालकी, सकल सवाँरि सवाँरि ।
सूसेवक जन अमित युत, भूषन वसन सुधारि ।।
मग में इतते अवधि लौं, फिरै फौज दिन रैन ।
सुख दै सकल वरात कौ, सकल भाँति मन चैन ।।
मग विच बहु विधि इतर के, कुँड भराइये जाइ ।
चोवा चन्दन अरगजा, सरित अनेक बनाइ ।।
केशरि मृगमद के अमित, सैल मुभग रचावहु ।
मग विच इतते अवध लौं, वारि गुलाब बहाहु ।।
गिलम गलीचे रेशमी, विविध रंग विछवाई ।।
तापर सुमन सुगंध के, रचना रुचिर पुराइ ।।
पय लगि महिषी धेनुबहु, सेवक जुत मग माँझ ।
विन याचे जाहिर करे, गनै सबेर न साँझ ।।

दधि चिउरा भरि माटवहु, मगविच देहु धराई ।
मेवा मगद मिठाइ बहु, करि करि बिनय पवाइ ।
दाख छुहारादिक अमित मेवन के द्रुम पाँति ।
ललित रचाई रचन कै, मग बिच सतर सुभाँति।
कौतुक ख्याल अनेक बिधि, यैना चित्र बिचित्र ।।
मग बिच इतते अवधि लौं, रचना रचौ सुमित्र ।।
घृत मधु मिश्री कंद के, मग विच कुण्ड अनेक ।
भर वाइय इत अवधि लौं,तहँतहँ जन सबिवेक ।।
गज मुक्तामणि कनक के, बहु बिधि भूषण हार ।
धरि धरि वैठे बनिकजन, अच्छनिपुंज अपार ।।
करि करि बिनय बराति कहँ,हठि हठि दे सुखछाइ।
मोल कहैं तौ कान में, अँगुरी दइ मुसुकाइ ।।
सूति रेशमी बसन बहु, बैठे मग बिच जाइ ।
करि करि बिनय बराति कौ, पहिरावै सुखछाइ ।

।। छप्पय ।।

जनवासे के हेतु रचौ, नव दुर्ग बृहद रसाल ।
बाजि शाल गजशाल पालकी, स्पंदन साल ।।
अष्ट आवरन रीति यथोचित बनै बिभागा ।
आवहिं चारिउ बरन अवध पति के संग लागा ।।
अपनि अपनि मरजाद जुत रहे सुखी सब लोग ।
तेहि बिधि रचना रचहु सबजुत बिलाश सबभोग।

चित्र विचित्र सुघाट वाटिका कूप तड़ागा ।
अरू मेवन के बाग फूल वाटिका विभागा ।।
हौद फूहारे कुण्ड नगन जटि रचना नाना ।
खस खाने बहु रंग रचौ भीतर तखाना ।।
छवो ऋतु प्रति रूपक बने छवो ऋतु के अनुकूल ।
उत्तम मध्यम नीच लघु, सबहिं जथा सुख मूल ।।
दो०-असन वसन सज्जा सुरभि, कंचन मनि बहु रंग ।
भरवावौ सब सदन प्रति, सुखप्रद जनहित संग ।।
चत्वर चौक अजिर बहु भाँती । खचित मनोवहु चित्रनि पाँती
कोर कोर मनि कुसुमनि पौधा।जाति जाति अतरनिमिलसौधा
रचहु पुरि अमरावति समाना । यथा योग्य सब वस्तु विधाना
बाँधहु थल थल तुरङ्ग निशाना । द्वार द्वार तोरन विधि नाना
राजमार्ग कीजै विस्तारा । सब थल रहै सुगंध प्रचारा ।।
हेम कलश कलकोट कंगूरे । करों रचना मन्दिर समरूरे ।।
द्वार बजार कोट गृह नाना । अमरावति समकरू निरमाना ।
हाट वाट के ठाट ठटावो । वीथिन वीथिन बाग बनावो ।।
दो०-मध्य महामणि सदन वर, तहँ कौशलपति वास ।
अमित भाँति करि रचिये सो, निरखत होत हुलास ।
मज्जन भोजन शैन पुनि नित्य एकांते सुगेह ।
जथा विभाग बनाय सब, कंचन मणि अवलेह ।।
कनक वनावट के सकल, अवर अंसुक जाल ।
तोरन रचना झालरैं, कलश कंगूरनि माल ।।

दूर दरशिका मनि अमित, दीर्घ स्वरूपा भास।
जहँ तह वांधिय द्वार पट, बहु तक कौतुक हास ॥
इक जोजनपुर प्रान्त में, रचहू एक प्रकार।
प्रथम वराति निवास हित, सकल विभाग सुघार।
आवतहीं भोजन करैं, हरै पंथ श्रम लोग।
इततै अगवानी सजै, मिलै बिचारि सु लोग ॥

बाग तड़ाग सुहावन लागे। जल की नहर सकल दिशि भागे।
विबिध रंग के फूल लगाये। हौद फटिक के अतिछबि छाये॥
थल थल कंचन लागे फुहारा। कोट चहूँ कित तुंग दुवारा॥
कलित हेम अति सुभट कपाटा। हाटक कलश कंगूरन घाटा।
विविध भाँतिके तने विताना।झालरी झूलि झलक विधिनाना
कनक दण्ड लगि तुङ्ग महाना। फहरहिं चंपक वरण निशाना
कमला तीर सघन अमराई। जहँ बसंत ऋतु रहत सदाई॥
कीन्ह तहाँ जनवास बिचारा। बिरचे थल थल विविध अगारा
रचन लगे रचना यहि भाँती। सकल शिलिपवर सुघर सुजाती
विश्वकर्मा सब सोधन करते। जहँजस उचित सुछवि तसधरते
विविध भाँतिनिमि नगर सजावा।मनहुँमदन निज हाथबनावा
रिद्धि सिद्धि युत पुरी सुहाई। शिव सुरेश विधिलोक लजाई।
आदि शक्ति जहाँ करै विहारा। भृकुटि विलास ज्ञासुजगसारा
तेहि की शोभा कौन बखानै। जेहि देखि अमरपुरी थकमानै।

दो०-मिथिला ते अरु अवध लगि, दीयो पंथ बनाय।
तिमि जनवास वास वर, सकल सुपास रचाय ॥